मई-2013 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 12 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मई -२०१३

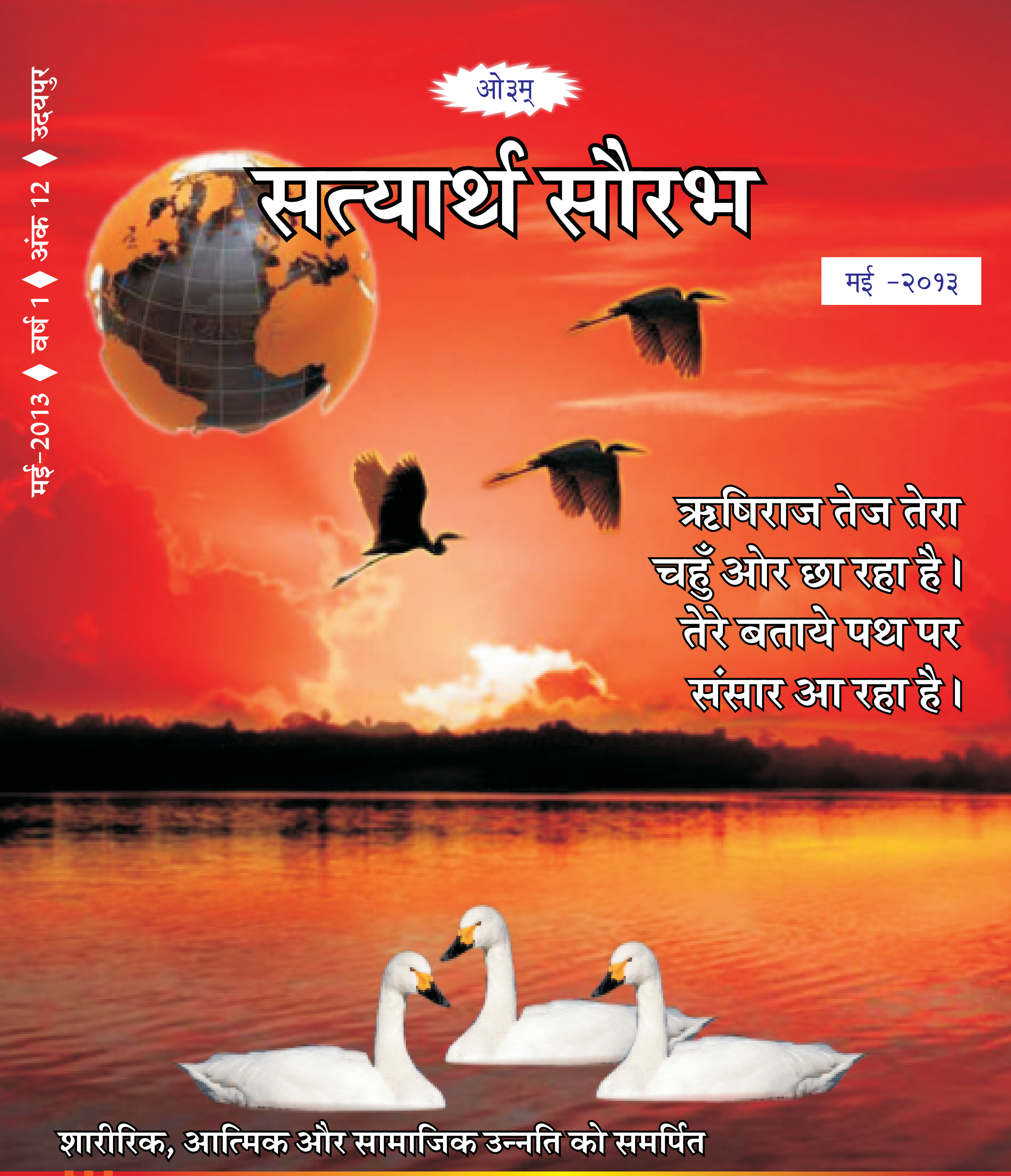

ऋषिराज तेज तेरा
चहुँ ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर
संसार आ रहा है।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १०

शुद्धता – उत्तमता – गुणवत्ता
3 महत्त्वपूर्ण काम
1 नाम
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
एम डी एच
मसाले
असली मसाले सच-सच
Sambhar masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
Garam masala
Kitchen King
Dal Makhani masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
वैशाख कृष्ण द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

May - 2013

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

छन्द विज्ञान

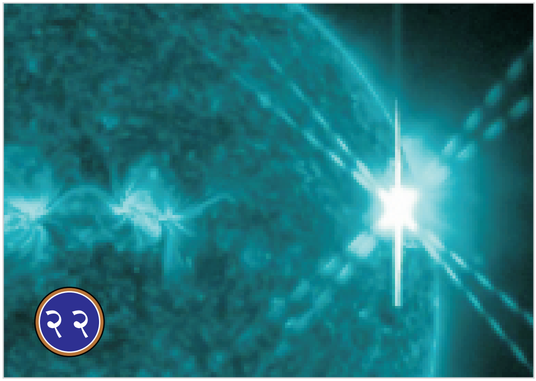

अन्धविश्वास कैसे कैसे ?

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन	३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार १८

हलचल १९

०४ वेद सुधा
०६ भावांजलि- आचार्य (स्व.) प्रेमभिक्षु
११ युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द
१३ तीन देवियों का धारण
१६ तुम मुझे गाय दो, मैं तुम्हें भारत दूँगा
२० चार लाख रु. का इनामी देशभक्त
२१ बाल वाटिका
२६ शिक्षा की आवश्यकता
२७ दयानन्द सूक्ति - संग्रह
२८ मधुमेह - कारण व उपचार

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - १२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३९३७६, ९८२८९२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

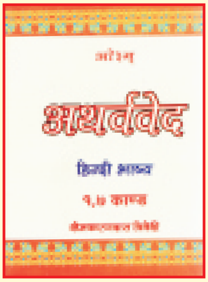

वेद सुधा

द्वेष भाव का छूटना कठिन अवश्य है पर असम्भव नहीं

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्व० ३/३०/१

गतांक से आगे ....

इसी सन्दर्भ में महापुरुषों के उदाहरणों से पता चलता है कि उन्होंने द्वेष-भाव को किस प्रकार से जीत रखा था। उनका व्यवहार अपने विरोधियों के प्रति कैसा था।

मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी महाराज को विमाता कैकेयी के कारण वनवास मिला। विधि की विडम्बना देखिए कि जिन्हें कल राजा बनना था, उन्हें भिखारी बनना पड़ा। साम्यावस्था को धारण करने वाले व्यक्ति ने वनवास को भी वरदान समझकर स्वीकार कर लिया। इससे भी बड़ी बात है कि उन्होंने कैकेयी के विरुद्ध कोई दुर्भाव मन में नहीं रखा। उसके विषय में कोई अपशब्द मुँह से नहीं निकाला। अविद्वेष की यह चरमसीमा है। यही महापुरुषों का महापुरुषत्व है। जिसके कारण महलों में पले एक राजकुमार को चौदह वर्ष तक जंगल की यातनाएँ सहन करनी पड़ीं, अनेक कष्ट उठाने पड़े, पत्नी को हाथ से खोना पड़ा, भयंकर युद्ध करना पड़ा- कितने घोर दुःख सहने पड़े! परन्तु उस महापुरुष के मुख से कैकेयी के प्रति कोई अपशब्द नहीं निकला। यह बड़े धैर्य और आत्मविजय का लक्षण है।

महात्मा बुद्ध भी अविद्वेष की साक्षात्-मूर्त्ति थे। एक बार उन्होंने भारद्वाज नामक ब्राह्मण को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी। उसका एक सम्बन्धी महात्मा बुद्ध से बहुत कुपित हो गया। वह उनके पास खड़ा होकर गालियाँ बकने लगा। वह गालियाँ देता था और महात्मा बुद्ध मुस्कराते जाते थे। आखिर, हड्डी और चमड़ी का शरीर ही तो था। वह गालियाँ देते-देते थक गया। जब चुप हो गया तो महात्मा बुद्ध बोले- ''तुम्हारे घर यदि कोई अतिथि आये तो क्या तुम उसका सत्कार करते हो?'' वह क्रुद्ध होकर बोला- ''यह भी कोई पूछनेवाली बात है?घर में अतिथि आये और सत्कार न किया जाए?'' महात्मा बुद्ध मुस्कराते हुए बोले- ''यदि वह तुम्हारे भोजन को स्वीकार न करे तो तुम्हारा दिया हुआ अन्न-जल किसको प्राप्त होगा?'' वह चिढ़कर बोला- ''वह भोजन मुझे ही प्राप्त होगा और किसे?'' इस पर महात्मा बुद्ध कहने लगे- ''प्रिय! आतिथ्य के रूप में दिये गये तुम्हारे भोजन को हमने स्वीकार नहीं किया, अतः यह तुम्हें ही प्राप्त हुआ।'' इस पर वह व्यक्ति बहुत लज्जित हुआ और महात्मा बुद्ध के चरणों में गिरकर क्षमा-याचना करने लगा।

यही महापुरुष का महापुरुषत्व था। यदि महात्मा बुद्ध भी वैसा ही आचरण करते जैसा कि उस व्यक्ति ने किया था तो दोनों में कोई अन्तर न रहता।

स्वामी शंकराचार्य जी भारतवर्ष के एक महापुरुष हुए हैं। उन जैसा मिश्नरी आज तक ईसाइयत ने भी उत्पन्न नहीं किया। शंकर ने 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः' के सिद्धान्त का प्रचार करते हुए बौद्ध और जैन मत की धज्जियाँ उड़ा दीं। आचार्य शंकर को कश्मीर में विष देकर मार डाला गया। यदि शंकर जीवित रह जाते तो मुझे एक बात का निश्चय है कि वे कभी भी यह न कहते कि मेरे विषदाताओं को कोई दण्ड दिया जाए। यही महापुरुष का महापुरुषत्व होता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी योगिराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज अविद्वेष, उदारता और क्षमाशीलता की साक्षात् मूर्त्ति थे। उनके जीवन में अनेक घटनाएँ आती हैं, जो उनके इन गुणों को सिद्ध करती हैं।

काशी-शास्त्रार्थ की समाप्ति पर महर्षि दयानन्द जी महाराज का घोर अपमान हुआ। उन पर ईंट, गोबर, पत्थर और जूते फेंके गये। उन्हें अनेक अपशब्द कहे गये। पण्डित ईश्वरसिंह नाम के एक निर्मले सन्त काशी में वास करते थे। उन्होंने आनन्दोद्यान से लौटते हुए जनसमुदाय को कुवचन बोलते हुए देखा। उनके मन में इच्छा हुई कि चलो, इस समय चलकर दयानन्द की दशा देखें। यदि इस महान् अनादर से उनका चित्त विचलित न हुआ तो समझेंगे कि वह सच्चा ब्रह्मज्ञानी और एक पहुँचा हुआ महात्मा है।

यह विचार लेकर सन्त ईश्वरसिंह आनन्दोद्यान में पहुँचे। ईश्वरसिंह जी को आते देख ऋषि दयानन्दजी मुस्कराये और उनका बड़े आदर से स्वागत किया। दोनों मिलकर बहुत समय तक आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे। इतनी लम्बी बातचीत

में ईश्वरसिंह को स्वामी जी के मुखमण्डल पर उदासीनता का एक भी धब्बा दिखाई न दिया। उनकी मुस्कराहट की चन्द्रछटा में किंचित्मात्र भी न्यूनता नहीं आई। उनके हृदय से दुःख और विषाद का एक भी श्वास न निकला। उन्होंने लोगों के अन्याय एवं अत्याचार की कोई चर्चा नहीं की।

पण्डित ईश्वरसिंह ने जब यह देखा कि इतने घोर अपमान और निष्ठुर अन्याय के पश्चात् भी ऋषि दयानन्द जी ने मुँह से एक भी अपमानजनक शब्द नहीं निकाला तो उन्होंने ऋषि दयानन्द जी के चरण छूकर कहा, ''महाराज! आज तक मैं आपको वेदशास्त्र का ज्ञाता एक पण्डितमात्र समझता रहा हूँ, परन्तु आज पण्डितों के घृणित उत्पात से और विरोध की भयंकर आँधी से आपके हृदय-सागर में राग-द्वेष की एक भी लहर उठते न देखकर मुझे पूर्ण निश्चय हो गया है कि आप वीतराग महात्मा और सिद्धपुरुष हैं।'' यह कहकर सन्त ईश्वरसिंह महर्षि दयानन्द से विदा हो गये।

उपर्युक्त घटना सिद्ध करती है कि महर्षि दयानन्द में द्वेष का सर्वथा अभाव था। उनकी मानसिक भावभूमि उच्चकोटि की थी। उनके जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे इस तथ्य की पुष्टि होती है। इस प्रसंग में एक घटना प्रस्तुत की जाती है-

गंगा मन्दिर के पुजारियों को लोग गंगा-पुत्र कहते हैं। एक गंगा-पुत्र स्वामी जी के समीप रहता था। उसके प्रातःकाल के नैत्यिक कर्मों में यह भी कर्म था कि वह स्वामीजी से थोड़ी दूर खड़ा होकर नित्य नियमपूर्वक उन्हें गालियाँ सुनाया करता था। उसका यह पामरपन बीसियों दिन तक निरन्तर होता रहा, परन्तु महर्षि ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

श्री स्वामी जी महाराज के पास नित्य अनेक भक्तजन आया करते थे। उनमें से कोई लड्डू भेंट करता, कोई पेड़े चढ़ा जाता और कोई बादाम-मिश्री आदि भोज्य पदार्थ अर्पण कर जाता था। स्वामी जी महाराज ये सब पदार्थ अपने सत्संगियों में प्रसादरूप में वितरण कर दिया करते थे। एक दिन सायंकाल को कुछ लड्डू-पेड़े पड़े रह गये। महाराज यह सोच ही रहे थे कि ये उत्तम पदार्थ किसे दें कि इतने में उन्होंने देखा कि वही गाली देने वाला गंगा-पुत्र सामने से आ रहा है। उन्होंने उसे आदर से अपने समीप बुलाकर प्रेमपूर्वक वे सभी पदार्थ उसे दे दिये और साथ ही कहा कि 'सायं समय नित्य ही हमारे पास आया करो। हम तुम्हें बहुत-सी खाद्य वस्तुएँ दिया करेंगे।'

जब छः-सात दिन तक वह गंगा-पुत्र स्वामीजी से मिठाइयाँ प्राप्त करता रहा और महाराज ने उसकी गन्दी गालियों की बात एक बार भी न चलाई तो पश्चात्ताप के कारण उसका चित्त उसे भीतर-ही-भीतर कचोटने लगा। अन्त में वह महाराज के चरणों में आ पड़ा और आँसू भरकर कहने लगा, ''भगवन्! यदि मेरी कठोरता का कोई पार नहीं तो आपकी सहनशीलता भी अपार है। आपके सौजन्य ने मेरी दुर्जनता को जीत लिया है। कृपया मेरे पिछले सभी अपराध क्षमा किये जाएँ।'' महाराज ने उसे आश्वासन और आशीर्वाद देते हुए कहा, ''हमने आपके वचनों को स्मृति में स्थान नहीं दिया है। आप भी उन गई-बीती बातों को स्मरण न कीजिए।''

द्वेष के अभाव की एक और घटना इसी सन्दर्भ में उपस्थित की जाती है-

पूना में ऋषिवर दयानन्दजी महाराज के चौवन व्याख्यान बड़ी धूमधाम से हुए। जब उनका अन्तिम व्याख्यान समाप्त हुआ तो महाराज के गले में पुष्पमाला पहनाई गई। एक पालकी में वेद रखे गये और स्वामीजी को हाथी पर आरूढ़ होने के लिए कहा गया, परन्तु स्वामीजी भक्तजनों के साथ पैदल ही चले। एक भारी समारोह के साथ शोभा-यात्रा निकाली। उधर पूना नगर में कुछ उपद्रव-प्रिय लोगों ने गर्दभानन्द आचार्य की सवारी निकाली। जैसे-जैसे नगर कीर्तन आगे बढ़ता था वे लोग भी कलह और कोलाहल की मात्रा बढ़ाते जाते थे, असंख्य अण्ड-बण्ड बातें बकते थे। कई सभ्य पुरुष उनको धिक्कारते थे, परन्तु वे टलनेवाले नहीं थे। उपद्रवियों ने स्वामी जी पर कीचड़ फेंकी, ईंट और पत्थर बरसाये। पामर पुरुष अपमान करते, अपशब्द कहते, कीचड़ फेंकते और विविध प्रकार से अवहेलना करते थे, परन्तु स्वामीजी हँस रहे थे। उनके मुखमण्डल की आभा में कोई कमी नहीं आई। उनको कुछ भी रोष नहीं आया।

उपर्युक्त घटनाएँ तो महत्त्वपूर्ण हैं हीं, परन्तु इनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण वे घटनाएँ हैं जहाँ महर्षि दयानन्द प्राणघातकों को भी क्षमा प्रदान करते हैं। उस समय उनके द्वेष का अभाव आध्यात्मिकता की चरमसीमा को प्राप्त होता दिखाई देता है। ऋषि का ऋषित्व और योगी की साधना मानो साकाररूप धारण कर लेते हैं।

अनूपशहर की घटना है। स्वामीजी महाराज के प्रचार-कार्य से लोग बहुत चिढ़ गये थे। उनमें से कुछ-एक तो उनके प्राणलेवा तक हो गये थे। एक दिन एक ब्राह्मण उनके पास आया। उनसे विनयपूर्वक नमस्कार करके श्रीचरणों में एक पान भेंट किया। स्वामीजी ने सहज स्वभाव से उसे स्वीकार किया और चबाने लगे, परन्तु रस लेते ही वे जान गये कि यह विषयुक्त है। उन्होंने उस नीच व्यक्ति को कुछ नहीं कहा। वे न्योली क्रिया करने के लिए गंगा तट पर चले गये। उन्होंने विष बाहर निकाल दिया। इस घटना का समाचार नगर में फैल गया। सैयद मुहम्मद तहसीलदार को भी इस घटना का पता चल गया। पता चलते ही उसने उस नराधम को बुलाया और बन्दीगृह में डाल दिया। इसके पश्चात् वह स्वामीजी के दर्शनों के लिए चला। रास्ते में उसने प्रसन्नता अनुभव की कि स्वामीजी के पास जाने से वे प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद देंगे, परन्तु हुआ इसके विपरीत। ऋषि ने दृष्टि हटा ली और बात नहीं की तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। तब उसने स्वामीजी से कारण पूछा। स्वामीजी बोले,''सैयद मुहम्मद! मैं तो संसार को बन्धनमुक्त करने आया था, परन्तु आपने मेरे लिए ही एक व्यक्ति को बन्धन में डाल दिया। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तो सज्जन अपनी सज्जनता क्यों छोड़ें?''

इस घटना से पता चलता है कि अपने घातक को क्षमा प्रदान करनेवाले उस दिव्य व्यक्ति में द्वेष का किस प्रकार अभाव था। इसी प्रकार की घटना प्रयाग की है।

एक दिन रायबहादुर सुन्दरलाल जी मित्रों-सहित स्वामीजी के समीप आये। स्वामीजी उस समय ध्यानावस्थित थे। वे सब सज्जन बैठ गये। कोई आधा घण्टे के पश्चात् स्वामी जी भीतर से बाहर आये। सबने झुककर उन्हें 'नमस्ते' की। उस समय स्वामीजी अपने आप हँस रहे थे। पण्डित सुन्दरलाल जी ने पूछा, "आप किस बात पर हँस रहे थे?" स्वामी जी ने कहा, "एक मनुष्य मेरी ओर चला आता है। कुछ देर ठहर जाइए। उसके आने पर आपको एक कौतुक दिखाई देगा।"

इस बात के कुछ समय पश्चात् एक ब्राह्मण मिष्ठान्न लिए आ पहुँचा। उसने 'नमोः नारायण' करके स्वामीजी को मिठाई भेंट की और कहा, इसमें से कुछ भोग लगाइए।" स्वामीजी ने उसे कहा, "लो, थोड़ी-सी तुम भी खाओ।" परन्तु उसने न ली। तब महाराज ने डाँटकर कहा, "लेते क्यों नहीं हो?" वह काँप तो गया, परन्तु मिष्ठान्न लेने से झिझकता ही रहा। उस समय स्वामी जी ने कहा, "यह आदमी हमारे लिए विष-मिश्रित मिष्टान्न लाया है।"

पण्डित राय बहादुर सुन्दरलाल पुलिस बुलवाने लगे, परन्तु महाराज ने कहा, "देखो, यह अपने पाप के कारण कितना काँप रहा है! इसे पर्याप्त दण्ड मिल गया है, इसलिए पुलिस न बुलवाइए।" उन्होंने उस ब्राह्मण को क्षमा प्रदान की और छोड़ दिया।

उनके जीवन की अन्तिम घटना, जिसने उनकी जीवन-लीला को समाप्त कर दिया, क्षमाशीलता और उदार हृदयता का ज्वलन्त उदाहरण है। आश्विन बदी चतुर्दशी संवत् १९४० (सन् १८८३) को रात्रि के समय महाराज ने रसोइये से दूध लेकर पान किया और सो गये। थोड़ी ही देर तक आँख लग पाई थी कि उदर-पीड़ा से वे जाग उठे। उन्होंने कई बार वमन किया। उनके पेट में बहुत तीव्र शूल उठ रहा था। वे असह्य वेदना अनुभव कर रहे थे। उन्होंने जगन्नाथ को पकड़ लिया। जगन्नाथ ने अपना जघन्य अपराध स्वीकार भी कर लिया। वे जगन्नाथ से कहने लगे, "मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया। तुम नहीं जानते कि इससे लोकहित की कितनी हानि हुई है। जगन्नाथ! लो, ये कुछ रुपये हैं, मैं तुम्हें देता हूँ। ये तुम्हारे काम आएँगे, परन्तु जैसे भी हो, राठौर-राज्य की सीमा से पार हो जाओ। यदि राजा को इस बात का पता चल गया तो तुम्हारे प्राण नहीं बच पाएँगे। जगन्नाथ! अब देर न करो। जाओ, चुपचाप भाग जाओ। यह भेद मैं किसी को नहीं बताऊँगा।"

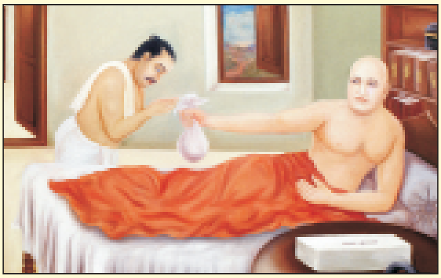

अपने घातक को क्षमा प्रदान करने और उसे बचाने के लिए धन देने का यह उत्कृष्ट उदाहरण संसार के इतिहास में कदाचित् ही मिलेगा। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनमें अपने घातकों के लिए भी द्वेषभाव नहीं था। यह उनकी आध्यात्मिकता की चरमसीमा थी, इसी में ही ऋषि का ऋषित्व निहित था।

परन्तु ध्यान रहे कि वे परमयोगी और आदर्श संन्यासी थे। घातकों को क्षमा प्रदान करना ही उनका धर्म था। यह विशुद्धरूपेण व्यक्तिगत धर्म था। सामाजिकता और राष्ट्रीयता का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। सामाजिकता और राष्ट्रीयता की दृष्टि से उन्होंने 'सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्ताव' की बात कही है।

- प्रो. रामविचार
वेद-सन्देश से साभार

□□□

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

➲ धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।

➲ पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।

➲ मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।

➲ मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।

➲ सुन्दर गेटअप "५.६x९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

अन्धविश्वास कैसे कैसे ?

आत्म निवेदन

आज राष्ट्र के सम्मुख अनेक चुनौतियाँ हैं जिनका जिक्र भी होता है, हो-हल्ला भी मचता है। परन्तु दिनों-दिन बढ़ते पाखण्ड व अन्धविश्वास पर ज्यादा चिन्ता व्यक्त करते नहीं देखा जाता है। ऐसी समस्त मूर्खतापूर्ण घटनाओं को आस्था से जोड़ देने के कारण इस पर टिप्पणी करना/चर्चा करना/ इन आडम्बरों को दूर करना करणीय नहीं समझा जाता। जबकि इस प्रकार का बौद्धिक सर्वनाश राष्ट्र में 'विवेक-तत्व' को नष्ट कर सर्वनाश का कारण बन जाता है। आश्चर्य यह है कि वैज्ञानिक कहे जाने वाले युग में तथाकथित पढ़े लिखे लोग सर्वाधिक इस चपेट में देखे जा सकते हैं।

आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित अनेक सुधार कार्यों में अन्धविश्वास वा पाखण्ड का निर्मूलन मुख्य स्थान रखता है परन्तु आधुनिक परिवेश में, किस प्रकार अंधश्रद्धा के घने होते मकड़जाल को विनष्ट किया जाय, इस पर गम्भीर चिंतन दुर्भाग्य से हमने नहीं किया है। परन्तु अभी यह हमारा (इस आलेख का) विषय नहीं है। हम प्रयास करेंगे कि सत्यार्थ सौरभ के जरिए अन्धविश्वास के विभिन्न रूपों को तो कम से कम पाठकों की विचार-सरणि का विषय तो बनावें।

मैं प्रशंसा करना चाहूँगा इण्डियन एसोशियन आफ रेशनेलिटी के प्रमुख सनत एरमाडुकु की जिन्होंने पाखण्ड की घटनाओं की वैज्ञानिक व्याख्या करके उनकी निस्सारता को दिग्दर्शित करने का प्रयास किया है तथा निर्भीकता पूर्वक इस अविद्याजन्य व्यापार से जुड़े लोगों की पोल खोली है। पाठकों को सम्भवतः स्मरण होगा कि एक चैनल पर इन्होंने एक तथाकथित तांत्रिक गुरु को चुनौती दी थी कि वे उनका कुछ बिगाड़ कर दिखावे। यह एक पब्लिक शो था। गुरु ने खूब समय लिया, भाव भंगिमाएँ दिखायीं, समस्त प्रयास किए पर श्री सनत का कुछ भी न बिगाड़ पाए। इसके तथा ऐसे ही अनेक वीडियो न्यास की वैबसाइट पर आपको देखने को मिल सकते हैं। 'यू ट्यूब' पर अनेक वीडियो हैं। इन्हीं सनत ने वर्षों पूर्व एक दिवंगत अति प्रसिद्ध बाबा की सभी कलाबाजियों जैसे खाली हाथ में से भस्म निकालना, घड़ी निकालना आदि का एक घण्टे के शो में प्रदर्शन किया था। इन्हीं सनत के विरुद्ध एक चर्च ने एफ.आई.आर. दर्ज करायी थी, कारण कि इन्होंने प्रभु यीशु की मूर्ति से तथाकथित रूप से पवित्र जल निकालने की घटना का पर्दाफाश किया था।

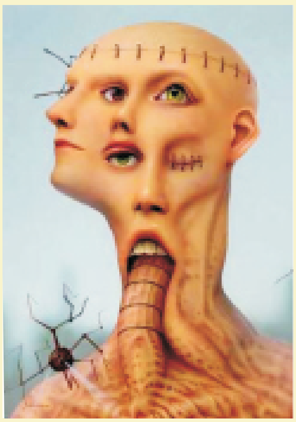

आज एक नहीं ऐसे सहस्रों सनत की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में आर्य समाज को पूरी योजना से काम करना चाहिए। केवल प्रवचनों तथा लेखों से बात नहीं बनेगी।

हमारा संविधान भी मानवीयता व वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा देने की बात ठीक उसी तर्ज पर कहता है जैसे कि महर्षि दयानन्द ने 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' की बात कही थी। परन्तु संविधान को लागू करने की जिम्मेदारी जिन विधायकों/सांसदों पर है क्या वे इस मकड़जाल से मुक्त हैं? नहीं। बल्कि कहा जा सकता है कि हमारे ये प्रतिनिधि सर्वाधिक अन्धविश्वासी जान पड़ते हैं। कोई-कोई अपवाद हो सकता है। बिना तथाकथित शुभ मुहूर्त निकलवाए तो ये चुनाव लड़ने का फार्म भी नहीं भरते। सर्वत्र अन्धश्रद्धा का अन्तहीन सिलसिला दिखायी देता है चाहे प्रसंग मन्त्री की कुर्सी का पद हो अथवा शपथ ग्रहण का। एक महिला सांसद की हत्या के बाद उस आवास में कोई रहना नहीं चाहता। वह मनहूस करार दे दिया गया है तथा २००१ से खाली ही पड़ा है। टोने टोटके आदि के खिलाफ बनने वाले कानून इसी कारण अटकते रहे हैं। जादू-टोना पर पाबंदी विधेयक-२०१० भी परवान न चढ़ सका। नेता, अफसर, एक्टर, क्रिकेटर सभी आडम्बर पूर्ण प्रक्रियाओं में अपना सौभाग्य तलाश रहे हैं, फिर आमजन की तो बात ही क्या है।

भूमि पूजन के एक कार्यक्रम पर रोक लगाने हेतु दायर की गयी जनहित याचिका को रद्द करते हुए न्यायाधीश की यह टिप्पणी कि भवन बनने में भूमि को कष्ट होता है अतः भूमि पूजन के माध्यम से भूमि से क्षमा मांगी जाती है विस्मित कर देने वाली थी। इन न्यायाधीश महोदय ने तो याचिकाकर्त्ता पर २०००० रु. का जुर्माना भी कर दिया।

एक अन्य मान्य अदालत का स्वागतयोग्य निर्णय भी सामने आया है। एक व्यक्ति ने गारण्टेड लाभ दिलाने के दावे के चलते किसी यन्त्र विशेष को क्रय किया तथा निर्देशानुसार उपयोग किया। परन्तु कोई लाभ न होने पर अदालत की शरण में गया। वहाँ माननीय अदालत ने उसे क्षतिपूर्ति दिलवायी। अदालत का यह रुख राहत प्रदान करने वाला है। अगर मिथ्या दावे करने वाले लोगों को सजा मिलने लगे तो भोले लोगों को लूटने वालों की संख्या में संभवतः कुछ कमी आवे।

महाराष्ट्र विधानसभा में २००३ में एक विधेयक लाया गया था जिसमें धर्म के नाम पर विभिन्न उपायों के माध्यम से ठगी करने वालों को सजा का प्रावधान था। इस विधेयक में भोंदू बाबाओं द्वारा अपनायी जाने वाली अघोरी क्रियाएँ, अनिष्ट प्रथाएँ, नीम हकीम इलाज, ठगी,

किसी शख्स को रस्सी वा सलाखों से बांधने, डंडे से पीटने, जूते भिगोकर उसका पानी पीने पर विवश करने, मिर्ची का धुआँ निगलने, किसी के तन पर गर्म वस्तुओं के चरके देने, आदि को अघोरी क्रियाओं के रूप में परिभाषित कर दण्ड का प्रावधान रखा गया है। परन्तु यह विधेयक १४ वर्ष से अभी तक लटका हुआ ही है।

हमारा मानना है कि कानूनी अंकुश तो होना ही चाहिए परन्तु इन सब अविद्याजन्य कुसंस्कारों के विरुद्ध जन-चेतना जगानी आवश्यक है। प्रभु ने मनुष्य को विवेक दिया है। तर्क इसका हथियार है, जिसका प्रयोग किसी भी घटना को समझने में किया जाना चाहिए। इसीलिए तर्क को 'ऋषि' कहा गया है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इसीलिए निर्देश दिया कि बालक में बचपन से ही इस प्रकार के अविद्याजन्य संस्कार न पड़ें इस बात का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। ११ वें समुल्लास में ऋषि ने हिंगजाल, जगन्नाथ में वस्त्र परिवर्तन, आग के ठीक ऊपर के चावल ठंडे तथा ऊपर के देग में गर्म, इत्यादि तथाकथित अनेक चमत्कारों का खण्डन किया है। महर्षिवर ने केवल हिन्दुओं के अन्धविश्वासों पर कलम चलायी ऐसा नहीं है, १२, १३ व १४ वें समुल्लासों में ईसाई, मुस्लिम आदि अन्य मत-मतान्तरों के अन्धविश्वासों की खुलकर समीक्षा की है। उन्होंने सत्यासत्य के निर्णयार्थ ५ कसौटियों का वर्णन किया है जो पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं।

१. जो-जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो, वह-वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है।

२. जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह सत्य और जो-जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है, वह सब असत्य है। जैसे कोई कहै- बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ, ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

३. ''आप्त'' अर्थात् जो धार्मिक, विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है, वह-वह ग्राह्य और जो-जो विरुद्ध वह-वह अग्राह्य है।

४. अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है, वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूँगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

५. आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव और अभाव।

किसी भी घटना को स्वीकार-अस्वीकार करने से पूर्व इन कसौटियों पर कसा जावे तो सत्य सम्मुख ही होगा।

कर्म सिद्धान्त अर्थात् जैसा व्यक्ति कर्म करेगा वैसा ही फल मिलेगा इसे कहने व तथाकथित रूप से मानने वाले तो लगभग सभी हैं पर पूर्ण निष्ठा से विश्वास रखने वाले अत्यल्प। इसी कारण लोग प्रभु के अटल सिद्धान्त पर विश्वास न कर, अनिष्ट को रोकने तथा पुरुषार्थ से कहीं अधिक प्राप्त करने की अभिलाषा से जगह-जगह मारे-मारे फिरते हैं। इसी भित्ति पर ठगों ने अपने करोबार का महल निर्मित किया है। अगर मनुष्य उपरोक्त स्थितियों में स्व-नियन्त्रण कर ले तो ये सब दुकानें बन्द हो जायँ। परन्तु हम आप सभी जानते हैं कि यह इतना आसान नहीं है। जब आम जनता, बड़े-बड़े राजनेताओं, प्रबुद्ध अफसरों, प्रोफेसरों इत्यादि को भ्रमजाल में आकण्ठ डूबा देखती है तो इस प्रवाह में बिना किसी रुकावट के उनका बहना तो तय हो जाता है। अभी हमने कहीं पढ़ा था कि केरल के प्रसिद्ध शबरीमला मन्दिर में 'मकर-ज्योति' जो कि तथाकथित देवताओं द्वारा प्रज्ज्वलित की जाती है, को देखने लाखों की भीड़ जाती है। दावा किया गया है कि इस ज्योति को राज्य का बिजली बोर्ड बड़ी-बड़ी भट्टियों में प्रच्छन्न रूप से प्रज्ज्वलित कर रहा है। बताइए कहाँ जाऐंगे शिकायत लेकर?

अन्धविश्वास ऐसा राष्ट्रघाती तत्व है जिसके प्रति अत्यन्त प्राचीन समय से विरोध की अपेक्षा जनता का समर्थन अधिक मिलता है। इसे रोकना तब और मुश्किल हो जाता है जब इसे धर्म का रूप दिया जाता है क्योंकि ऐसे में अंधश्रद्धा को रोकने के कदम को धर्म का व्यापार करने वाले आसानी से धर्म पर आक्रमण के रूप में प्रचारित कर देते हैं। हम इस विषय में इतने अन्धे हो जाते हैं कि इतिहास से भी सबक लेने को तैयार नहीं होते। भारत के पतन में इस अंधविश्वास और पाखण्ड का बड़ा हाथ रहा है।

महर्षि दयानन्द जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में महमूद गजनवी के सोमनाथ पर आक्रमण के संदर्भ में बड़ी वेदना के साथ लिखते हैं कि मन्दिर के अन्धविश्वासी महन्त लोग राजाओं को अन्तिम समय तक बहकाते रहे कि आप निश्चिंत रहें। महादेव प्रभु भैरव वा वीरभद्र को भेज देंगे वे सब म्लेच्छों का नाश कर देंगे। ऐसी-ऐसी बातों से राजा पुरुषार्थ हीन हो तमाशा देखते रहे। किसी ने आक्रमण की बात सोची भी तो ज्योतिषियों ने कह दिया कि अभी शुभ मुहूर्त नहीं है। तब तो वही हुआ जो होना था। मन्दिर मूर्त्ति तोड़े गये। अथाह सम्पत्ति लूटी गयी। पूजारियों की अत्यन्त दुर्दशा की गई। ऋषि लिखते हैं- 'देखो जितनी मूत्तियाँ हैं, उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती। पुजारियों ने इन पाषाणों की इतनी भक्ति की, परन्तु एक भी मूर्ति उनके शिर पर उड़के न लगी। जो किसी एक शूरवीर पुरुष की मूर्ति के सदृश सेवा करते तो वह अपने सेवकों को यथा शक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।' पाखण्ड व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की सोच को संकुचित कर देता है। इसका व्यापक दुष्प्रभाव पूरे समाज के लिए घातक है। इससे स्वयं को व अन्यों को मुक्त कराने का कार्य कोई भी करे, उसका स्वागत किया जाना चाहिये। कैसे-कैसे मूर्खतापूर्ण, हास्यास्पद् तथा बुद्धि को विनष्ट कर देने वाले अन्धविश्वास हमारे चारों तरफ व्याप्त हैं, सत्यार्थ सौरभ के आगामी अंको में देने का प्रयास करेंगे। अविद्या से लड़ने का यह एक छोटा सा प्रयास होगा।

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

□□□

मैं सन् १९८४ में आगरा में अध्ययन करता था। स्वदेश प्रेम हमें माता-पिता से ही विरासत में मिला था। महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के बाद हमें यह आभास हो गया था कि बिना वैदिक ज्ञान के राष्ट्र का कार्य करना आकाश-पुष्प तोड़ने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इन्हीं दिनों आर्य समाज जयपुर हाउस आगरा में पूज्य आचार्य श्री प्रेमभिक्षु जी महाराज प्रवचन के लिए पधारे। हमारे एक मित्र ने हमें कहा कि मथुरा से एक विद्वान् आये हैं वे अच्छे वैदिक विचारक हैं, ईश्वर भक्त हैं, साथ ही साथ उनमें यह भी विशेषता है कि देशभक्त भी हैं। देश भक्ति की बात सुनकर सायंकाल के कार्यक्रम में हमने वहाँ जाने की योजना बना ली। जब हम अपने कुछ साथियों के साथ सत्संग स्थल पर चले गये तो उसके कुछ समय बाद पूज्य आचार्य जी का ऐतिहासिक उद्‌बोधन हुआ। अपने राष्ट्र के पतन की वेदना और राष्ट्रोत्थान के लिए उनकी ललक को देखकर हमारा हृदय प्रसन्नता से भर गया। पहली बार हमने किसी व्यक्ति में इतनी गहरी देशभक्ति देखी थी।

पुण्य स्मृति-भावांजलि
२५ अप्रैल

पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु जी की राष्ट्रभक्ति अनुकरणीय थी

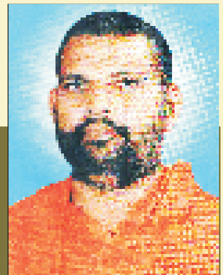

आचार्य स्वदेश

सत्संग के बाद हम साथियों सहित पूज्य आचार्य जी से मिले। पुनः आचार्य जी महाराज के पावन स्नेह ने हमें ऐसा प्रेरित किया कि हम अपना सर्वस्व समर्पित करके राष्ट्र कार्य में संलग्न

हो गये। वे राष्ट्र को वैदिक वाङ्मय के अनुसार परिभाषित करते हुए प्रायः व्याख्यानों में कहते थे कि- 'तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः इळा, सरस्वती मही' अर्थात् राष्ट्र का कल्याण इळा, सरस्वती, मही इन तीनों शक्तिरूपा देवियों के स्थापित होने से होगा। इड़ा अर्थात् संस्कृति-किसी भी राष्ट्र की आत्मा अपनी संस्कृति होती है। पूज्य आचार्य जी का अपनी संस्कृति के प्रति समर्पण उनके द्वारा रचित साहित्य से पता चल जायेगा। उनके द्वारा रचित शुद्ध कृष्णायन और शुद्ध हनुमच्चरित जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थों को पढ़कर ज्ञात होता है उनकी वैदिक संस्कृति के प्रति कितनी गहरी समझ तथा कितनी गहरी निष्ठा थी। वे राम और कृष्ण को वैदिक संस्कृति के पुरोधा मानते थे। श्री राम मन्दिर मुक्ति आन्दोलन के कार्यकाल में प्रायः जो सभायें वे संबोधित करते थे उनमें भी राम के व्यक्तित्व को संकुचित करने के लिए वे हिन्दू नेताओं और संगठनों को काफी खरी-खरी बातें सुनाते थे और जो राम, कृष्ण जैसे महापुरुषों के व्यक्तित्वों को एक तरफ करके केवल राष्ट्र की बात करते थे उनके प्रति पूज्य आचार्य काफी उद्वेलित होते थे। वे भारत में भारतीय संस्कृति स्थापित किये बिना भारत राष्ट्र की कल्पना करना भी हास्यास्पद मानते थे। पूज्य आचार्य जी काफी वेदना के साथ कहा करते थे कि आज राम वालों ने राष्ट्र को भुला दिया और राष्ट्र वालों ने राम को भुला दिया। जबकि भारत को भारत बनाने के लिए राम और राष्ट्र को एक साथ लेकर चलना होगा। राम की जन-जन में आज भी व्यापकता का कारण ही उनका भारतीय संस्कृति जिसको वैदिक संस्कृति कहें उसका प्रबल उपासक होना है। भारत सारे संसार के गुरुपद पर पुनः आसीन तभी हो सकता है जब वह वैदिक आदर्श जिनका अनुकरण श्रीराम और योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने करके दिखाया उसका सारा भारत अनुगामी बन जाए। बिना इस मार्ग पर चले भारत राष्ट्र की कल्पना मूर्खता है। पूज्य आचार्य श्री इसी ध्येय के प्रति आजीवन समर्पित रहे।

जहाँ संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है वहीं सरस्वती अर्थात् भाषा राष्ट्र की वाणी है। बिना अपनी भाषा के प्रयोग किये राष्ट्र गूंगा ही है। पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु जी महाराज के जीवन को जिन लोगों ने देखा होगा वे जानते हैं उनकी लेखनी और वाणी से राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति अप्रतिम भक्ति साफ छलकती है। उनके व्याख्यानों में राष्ट्र भाषा का प्रवाह बहता है उसे सुनकर लोग मुग्ध हो जाते हैं। वे अधिकांशतः संस्कृत निष्ठ हिन्दी का ही प्रयोग करते थे। प्रोग्राम को वे सदैव पुरोगम ही कहते थे। ऐसे अनेक शब्द हैं जो मैंने केवल बोल-चाल के समय में भी उन्हीं के श्री मुख से सुने थे। उनकी अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति भक्ति प्रेरक और अनुकरणीय थी। यदि कोई व्यक्ति अपने विवाहादि उत्सव का निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में मुद्रित करवा देता

था तो वह व्यक्ति चाहे उनका कितना ही निकटतम हो, वे न उसके यहाँ जाते और न औपचारिकतावश ही उस निमंत्रण को स्वीकार करते। आर्य समाजों के कार्यक्रम में जाते थे वहीं किसी श्रद्धालु को घर में बुलाना है तो घर के द्वार पर लगी नाम पट्टिका हिन्दी में होनी चाहिए। अनेकों लोगों ने तो तत्काल ही अंग्रेजी वाली पट्टिका हटाकर हिन्दी वाली पट्टिका दूसरे दिन ही लगवा दी।

तीसरी चीज राष्ट्र के लिए भूमि है जो राष्ट्र का शरीर कही जाती है। पूज्य आचार्य श्री अपने व्याख्यानों में देश विभाजन के दर्द को बड़ी मार्मिकता से अभिव्यक्त करते थे इस प्रकार अपने जीवन का प्रत्येक पल पूज्य आचार्य जी ने अपनी राष्ट्रभक्ति को पूर्णतः समर्पित कर दिया। इस कार्य के लिए उन्होंने अपना जीवन, अपना घर परिवार कुछ भी न देखा। उनका राष्ट्र के प्रति अनुपम समर्पण आज भी हमें प्रेरित और उद्वेलित करता है। मैं तो जब संसार में संघर्ष करते-करते मानसिक रूप से दुर्बलता का अनुभव करता हूँ, तो आचार्य जी का तपोमय जीवन हमें नई स्फूर्ति प्रदान करता है।

आज हमारे बीच से गये हुए उन्हें १८ वर्ष बीतने को हो रहे हैं पर उनकी एक-एक बात हमें देश के लिए सर्वस्व बलिदान के लिए प्रेरित करती रहती है। उनके संसर्ग में जो भी आया वह देशभक्ति के रंग में सराबोर हुए बिना रह न सका। उनकी पुण्यतिथि के पावन अवसर पर हम तपोभूमि परिवार व अन्य जो भी उनसे सम्बन्धित जन हैं यह आशा करते हैं कि उनका स्मरण करते हुए अपने को अधिक से अधिक राष्ट्रसेवा में समर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित करें। आर्य समाज के पावन कार्य को बढ़ाने के अतिरिक्त मैं समझता हूँ और कोई देशभक्ति नहीं हो सकती है। वर्तमान में आर्यसमाज में आई शिथिलता से निराश न होकर एक जुट हो महर्षि के कार्य में लग जायें इसी में सबका कल्याण निहित और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य बनेगा। उनकी पुण्य तिथि पर हम सब यही संकल्प लेकर आर्यत्व की स्थापना जन-जन में करें, जिसके लिए पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु महाराज ने अपना जीवन समर्पित किया।

"मेरे पूज्य पिता (स्व.) आचार्य प्रेमभिक्षु जी के बारे में उनके जीवन को सर्वाधिक निकट से देखने वाले उनके सर्वाधिक प्रिय आचार्य स्वदेश जी के ये उद्गार उनके बारे में हैं। अब तक के अनुभव के आधार पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सत्यार्थ सौरभ' के ८० प्रतिशत से अधिक पाठक पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु जी से सुपरिचित होंगे। आचार्य जी द्वारा प्रवर्तित वैदिक परिवार निर्माण योजना अद्‌भुत थी। इससे कलकत्ता, मुम्बई, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि में न जाने कितने परिवार के परिवार आर्य समाजी बने। वे आज भी जहाँ मिलते हैं, पूज्य पिताजी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा व आत्मीयता से चर्चा करते हुए उन्हें अपने जीवन का निर्माता बताने में तनिक भी संकोच नहीं करते। अर्थ-शुचिता तथा कथनी व करनी का एक्यभाव उनके व्यक्तित्व की सर्वोपरि विशेषता थी।

परन्तु कतिपय अहंकार व द्वेष की कीचड़ में आकण्ठ डूबे, केवल अपने को ही आर्य मानने वाले, दिवंगतों पर शर-वर्षा करने वाले आत्ममुग्ध कायरों को आर्य समाजोन्नति में दूसरे किसी का योगदान दिखायी नहीं देता। महर्षि दयानन्द ने पूना प्रवचनों में ऐसे लोगों की दृष्टि को ही काक-दृष्टि कहा है। परमात्मा कृपा करे कि ऐसे महामना आत्मचिन्तन कर कुत्सित प्रवृत्ति का त्याग कर सकें।"

– अशोक आर्य

□□□

महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा-नवलखा महल

नवलखा महल जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण हेतु जो महानुभाव अर्थ सहयोग भेज रहे हैं, उनका आभार प्रदर्शित करते हैं। **छोटी-बड़ी जो भी आहुति हो निःसंकोच इस पवित्र कार्य हेतु अर्थ सहयोग प्रदान करें।**

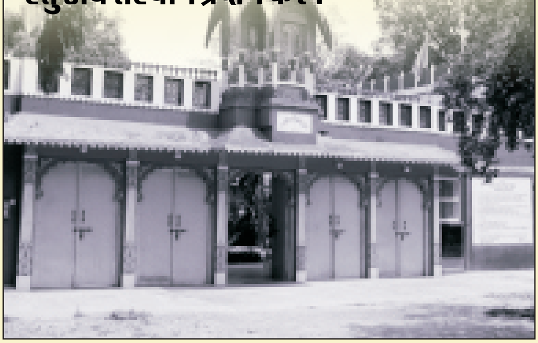

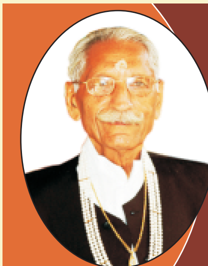

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

वरदहस्त हो परमेश्वर का,
प्रेरक बनें पवित्र विचार।
हर पल ही उत्कर्ष हो,
सपनें सारे हों साकार॥

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें, तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

खुशहाल चन्द्र आर्य

मोक्ष पाने के लिए वैसे तो मनु महाराज के बनाए दस गुणों की आवश्यकता है, पर तीन गुणों का होना अति आवश्यक है, वे हैं १. निष्काम कर्म २. वेदानुकूल जीवन ३. अष्टांग योग द्वारा समाधि तक पहुँचना।

१.निष्काम कर्मः- महर्षि दयानन्द अपने जीवन काल में सदैव परोपकारी कार्य ही करते रहे। उनका खाना-पीना बैठना-उठना, सोना-जागना सभी काम अपने स्वयं के स्वार्थ के लिए न होकर परोपकार के लिए थे। उन्होंने जीवन भर निष्काम कर्म किया। निष्काम कर्म वे होते हैं, जो अपने स्वार्थ के लिए न होकर सब परमार्थ के लिए होते हैं। जैसे द्वापर में भगवान कृष्ण ने किये थे। जो कर्म केवल परोपकार के लिए किये जाते हैं, उन्हें ईश्वरीय कर्म कहते हैं। ऐसे कर्मों का फल नहीं होता। जीव का पुनर्जन्म उसके किये कर्मों का फल देने के लिए होता है यानि उसने जैसे भी कर्म अच्छे या बुरे किये उसके फलस्वरूप ही उसको अगला जन्म मिलेगा। जिस महापुरुष के निष्काम कर्म ही होते हैं, जिनका फल देना बाकी नहीं रहता, उसका अगला जन्म न होकर, वह मोक्ष को ही प्राप्त होता है। महर्षि के जीवन में अनेकों घटनाएँ ऐसी आती हैं जो उनके निष्काम कर्म को सिद्ध करती हैं। महर्षि दयानन्द जब वेद प्रचार का कार्य यानि अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास और पाखण्ड का खण्डन करते थे, तब लोगों ने उनको बहुत पीड़ित किया। उनको गालियाँ दीं, पत्थर फेंके, रहने के लिए जगह नहीं दी, पर महर्षि ने उनका कभी भी बुरा नही चाहा। बुरे व्यक्ति जब भी उनसे बुरा व्यवहार करते थे, तब भी स्वामी जी उनसे अच्छा व्यवहार ही करते थे। जब कोई उनसे पूछता था कि आप इन दुष्टों से अच्छा व्यवहार क्यों करते हो तब भी स्वामी जी का उत्तर यही होता था कि जब वे अपनी बुराई नहीं छोड़ते, तो मैं अपनी अच्छाई क्यों छोड़ूं। इस उत्तर से पूछने वाला दंग रह जाता था और मन में सोचने लगता था

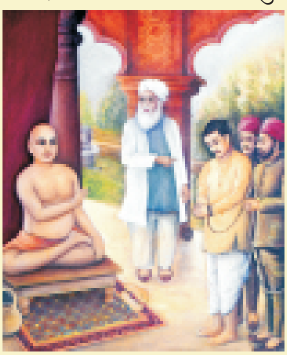

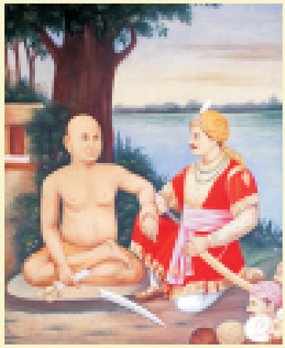

कि यह व्यक्ति मनुष्य है या देवता है और मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने लग जाता था। ईश्वर की अपार कृपा से तथा अपने परिश्रम और पूर्ण ब्रह्मचर्य से महर्षि में अथाह ज्ञान और बल था, पर उनमें अभिमान लेश मात्र भी नहीं था। वे क्षमा के सागर थे। जब राव कर्ण सिंह ने महर्षि पर खूब क्रोधित होकर तलवार का वार किया तब स्वामी ने अपने साहस और बल से उसके हाथ से तलवार को खींच कर अपने हाथ में पकड़ लिया और उसे जमीन पर टेक कर दो टुकड़े करके उसी की तरफ फेंक दिये और उसको क्षमा करते हुए कहा कि मैं आप जैसा व्यवहार नही करूँगा। जाओ! ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दे। ऐसी ही एक और घटना है। एक साधु स्वामी जी को नित्य गालियाँ देता था। जब कई दिन साधु ने गालियाँ नहीं दीं तो स्वामी जी अपने कुछ शिष्यों को साथ लेकर साधु का स्वास्थ्य जानने के लिए एक फलों का टोकरा लेकर उसके पास पहुँच गये। साधु देखकर भौंचक्का रह गया। यह क्या? जिसको मैं नित्य गालियाँ देता था, जिसको मैं केवल नास्तिक ही नहीं, राक्षस, नीच, पिशाच आदि तक कह देता था, वही व्यक्ति मेरे लिए फल लाया है। उसका हृदय परिवर्तित हो गया और उसने स्वामी जी के चरण पकड़ कर क्षमा माँगी। स्वामी जी ने कहा, नहीं आप तो मेरे ऊपर उपकार करते थे। मुझे अपने कर्त्तव्य का बोध करवाते रहते थे और मुझे धैर्य रखने की शक्ति प्रदान करते थे, इसीलिए आपके उपकारों के सामने मेरा उपकार बहुत तुच्छ है। यह थी स्वामी जी की धैर्य और क्षमाशीलता। क्षमाशीलता भी एक बहुत बड़ा उपकार है जो करने वाले के हृदय की विशालता को दर्शाती है और दोषी के हृदय को जीत लेती है।

महर्षि ने अपने अन्तिम दिनों में क्षमा और उपकार की पराकाष्ठा तब दिखाई जब स्वयं को विष देने वाले पं. जगन्नाथ रसोईया को जीवन दान ही नहीं दिया, साथ ही पाँच

सौ रुपये देकर उसे महल के दूसरे दरवाजे से बाहर निकालकर जोधपुर राज्य से रातों-रात बाहर निकल जाने को कह कर प्राणघातक के प्राणों की रक्षा की। इसके समान परोपकारी और क्षमाशील व्यक्ति इस धरा-धाम पर ढूढ़ने से भी नहीं मिलेगा। स्वयं को मारने वाले को जीवनदान देने वाले तो बहुत मिलेंगे परन्तु अपने प्राण-घाती को अपने पास से सहायता देकर उसका जीवन बचाने वाला महर्षि को छोड़कर शायद ही कोई मिले।

२. वेदानुकूल चलनाः- महर्षि जी का जन्म सन् १८२५ में टंकारा (गुजरात) में हुआ और १४ वर्ष की आयु यानि सन् १८३८ में शिवरात्रि व्रत पर यह जान लिया कि मन्दिर में बैठा मूर्ति के रूप में जो शिव है, यह सच्चा शिव नहीं है। सच्चा शिव तो कोई दूसरा ही है जो सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व सर्वान्तर्यामी है जो सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व संहारकर्त्ता है। मुझे तो उसी शिव को पाना है। इस शिव से तो कीड़ी की टांग भी नहीं टूट सकती। यह सोचकर बालक जिसका जन्म का नाम मूल शंकर था, वह सच्चे शिव को पाने के लिए घर के सब सुख और विवाह जैसे प्रलोभनों को त्यागकर जंगल की ओर चल पड़ा। बाईस वर्षों तक पूरे भारत का भ्रमण करके देश की भीषण पतित अवस्था को अपनी आँखो से देखा। फिर ईश्वर की कृपा से तथा स्वामी पूर्णानन्द के बतलाने से स्वामी जी एक अद्भुत त्यागी, तपस्वी, निर्लोभी, व्याकरणाचार्य प्रज्ञाचक्षु गुरुवर स्वामी विरजानन्द के

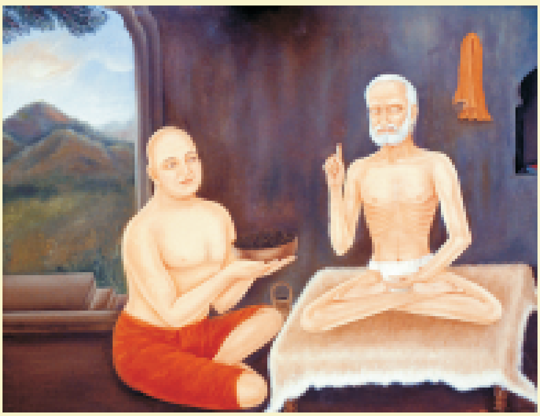

पास सन् १८६० में पहुँचे। उनकी गोद में तीन साल बैठकर यह जान लिया कि विश्व में जो अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड फैला हुआ है, इसका मूल कारण ईश्वरीयज्ञान वेदों का लुप्त होना ही है। स्वामी जी ने अपने सद्गुरु से वह चाभी प्राप्त कर ली जिससे वह कमरा खुल सकता था जिसमें वेदों को छुपाया हुआ था। महर्षि ने वेदों को बन्द कमरे से निकालकर उस ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश सब लोगों के सम्मुख प्रकाशित कर दिया है, उनके अनुसार चलने से मानव-मात्र अपने जीवन को शुद्ध व पवित्र करके अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जिसको प्राप्त करने के लिए ईश्वर, जीव को धरती पर भेजता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि महर्षि को भी ईश्वर ने मोक्ष में भेजा है, कारण कि उनका पूरा जीवन वेदानुकूल था।

३.समाधिस्थ स्थितिः- महर्षि ने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए जीया और दूसरों के लिए ही मृत्यु का आलिंगन किया। उन्होंने अपने मोक्ष के सुख को भी दूसरों के हित के लिए न्योछावर कर दिया। महर्षि अष्टांगयोग द्वारा अठारह घण्टों की समाधि के अभ्यासी बन चुके थे। वे चाहते तो समाधि से ही सीधे मोक्ष को प्राप्त कर सकते थे। पर वे तो अकेले ही मोक्ष में नहीं जाना चाहते थे। उनकी तो पूरे मानव-मात्र को मोक्ष का मार्ग दिखलाकर सबको मोक्ष भेजने की अभिलाषा थी। किसी साधु ने स्वामी जी से कहा, ऐ दयानन्द! तू क्यों सांसारिक पचड़े में पड़ रहा है, तुम तो अठारह घण्टों की समाधि लगाने के अभ्यासी हो, तुम तो मोक्ष के अधिकारी बन चुके हो तो तुम किस चीज की प्राप्ति के लिए सांसारिक पचड़े में फँस रहे हो? तब स्वामी जी ने अपनी भावना वाला उत्तर दिया, वही उत्तर उन्हें सभी महापुरुषों में सबसे ऊँचे स्थान पर बिठा देता है। तभी तो योग ऋषि अरविन्द ने कहा था कि- "मैं संसार के सभी महापुरुषों को हिमालय की चोटियों पर बैठा देखता हूँ पर महर्षि दयानन्द को मैं उस चोटी पर बैठा देख रहा हूँ जो सब से ऊँची है।"

जो व्यक्ति वेदों के ज्ञान का प्रकाश करके मानव-मात्र को मोक्ष दिलवाना चाहता है और स्वयं भी वेदानुकूल आचरण करता है, तो उसे ईश्वर मोक्ष न देवे, यह असम्भव है। इसी भावना के साथ आर्य समाज अपने गुरुवर देव दयानन्द के मृत्यु दिवस को निर्वाण दिवस के रूप में सन् १८८३ से मनाता आ रहा है।

गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स,
170 महात्मा गाँधी रोड़
(दो तल्ला) कोलकाता- 700007

❑❑❑

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

तीन देवियों का धारण

-महात्मा चैतन्य मुनि

वेद में सुक्रत बनने की प्रेरणा दी गई है साथ ही प्रक्रिया बताई गई है-

ओ३म् त्रिणि त्रितस्य धारया पृष्ठेवैरयद्रयिम्।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः।। (सा.३.२.१८.३)

मंत्र में सुक्रत बनने के लिए मुख्यतः पहली बात कही गई कि- त्रिणि त्रितस्य धारया- जो व्यक्ति जीवन में तीन बातों को धारण कर लेता है, वह सुक्रत बन जाता है। ऐसी बहुत सी तीन बातें हैं मगर यहाँ हम जिन तीन देवियों की चर्चा वेद में की गई है, उन पर चिन्तन करते हैं-

ओ३म् इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः।। (ऋ.१-१३-६)

मंत्र में इळा, सरस्वती और मही को कल्याणकारी बताया गया है। वैदिक संगति लगाने पर वेद- मंत्रों के अनेक अर्थ हो सकते हैं इसलिए कुछ विद्वानों ने 'इळा' को वैदिक संस्कृति, 'सरस्वती' को मातृभाषा तथा 'मही' को मातृभूमि कहा है। हमें अपनी वैदिक संस्कृति का अनुपालन करना चाहिए, अपनी मातृभाषा का आदर-सम्मान एवं कार्यान्वयन करना चाहिए और अपनी मातृभूमि की पूजा अर्थात् इसकी चतुर्दिक संवृद्धि और रक्षा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस मंत्र का भावार्थ इस प्रकार करते हैं- 'मनुष्यों को 'इळा' जो कि पठन-पाठन की प्रेरणा देनेहारी, 'सरस्वती' जो उपदेशरूप ज्ञान का प्रकाश करने और 'मही' जो सब प्रकार से प्रशंसा करने योग्य है, ये तीनों वाणी कुतर्क से खण्डन करने योग्य नहीं हैं तथा सब सुख के लिए तीनों प्रकार की वाणी सदैव स्वीकार करनी चाहिए, जिससे निश्चलता से अविद्या का नाश हो।' इस प्रकार महर्षि जी ने तीनों ही शब्दों को वाणी के रूप में विवेचित किया है और प्रेरणा दी है कि व्यक्ति को पठन-पाठन में लगे रहना चाहिए, उस पढ़े हुए उपदेश का प्रचार आगे से अपनी वाणी द्वारा करना चाहिए और ऐसी वाणी ही प्रशंसनीय है तथा इससे ही सब प्रकार की अविद्यादि का नाश हो सकता है।

यजुर्वेद में भी इन देवियों से संबंधित एक मंत्र है जिसमें मही के साथ भारती शब्द भी है-

होता यक्षत्तिस्त्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसऽइडा सरस्वती भारती महीः।
इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।। (यजु. २८-८)

अर्थात् (होता) दानपूर्वक यजन करने वाला (तिस्त्रःदेवी) तीन देवियों को (यक्षत्) अपने साथ संगत करता है, जो देवियाँ (भेषजम्) औषध हैं। (तिस्त्र) ये तीनों (त्रिधातवः) शरीर, मन व बुद्धि को धारण करने वाली हैं। (अपसः) कर्मशील हैं अर्थात् ये हमारे जीवन को क्रियाशील बनाने वाली हैं, (इन्द्र-पत्नीः) ये इन्द्र अर्थात् जीवात्मा की पत्नियाँ हैं। (महीः) महनीय हैं, (हविष्मति) हवि वाली हैं, (होतःयज) देखकर खाने वाले जीव तू इन देवियों को अपने साथ संगत कर ताकि ये (आज्यस्य व्यन्तु) शरीर में शक्ति का पान करने वाली हों। ये देवियाँ हैं- (इडा-सरस्वती-भारती) अर्थात् श्रद्धा, वाणी और मस्तिष्क में रहने वाली विद्या की अधिदेवता। महर्षि जी ने 'इळा', 'सरस्वती' तथा 'भारती' के अर्थ अध्यापक, उपदेशक और वैद्य किए हैं। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि ये तीन देवियाँ एवं जीवात्मा की तीन पत्नियाँ ही व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार हैं। जिस व्यक्ति के मन में श्रद्धा हो, वाणी में मधुरता हो और मस्तिष्क विद्या से सुसज्जित हो वही अपने जीवन में शोभनीय कर्म करके सुक्रत बन सकता है। कुछ विद्वानों ने 'इळा' का अर्थ मधुरवाणी, 'सरस्वती' का कवि, तत्वद्रष्टा व तीव्र बुद्धिवाला और 'मही' का ईश्वरोपासना किया है। इस दृष्टिकोण से भी मंत्र में आए शब्दों में क्रम से विचार करते हैं-

१. इळा- किसी भी व्यक्ति को अपनी वाणी का प्रयोग सोच समझकर ही करना चाहिए क्योंकि यह वाणी ही शत्रु को मित्र और मित्र को शत्रु बनाने वाली है। मनुजी कहते हैं-

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। (मनु. ४-१३८)

मनुष्य सदैव सत्य बोले और दूसरे को कल्याणकारक उपदेश करे, काणे को काणा, मूर्ख को मूर्ख आदि अप्रिय वचन उनके सम्मुख कभी न बोले और जिस मिथ्याभाषण से दूसरा अप्रसन्न होता हो उसको भी न बोले यह सनातन धर्म है। मधुरता भरी वाणी बोलने से व्यक्ति बड़ी से बड़ी समस्या का भी समाधान कर लेता है। वेद में प्रार्थना की गई है-

जिह्वाया अग्रे मधु मदुघान्मधुमत्तरः। मामित्किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव।। मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्। वाचा वदामि मधुमद्भूयासं मधुसदृशः। (अर्थव.१-३४-२,४,३)

मेरी जिह्वा के अगले भाग पर मधु हो और जिह्वा की जड़ में

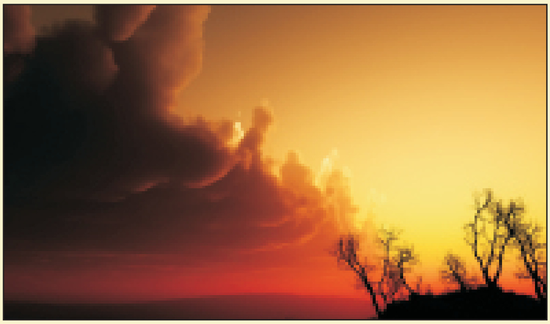

माधुर्य हो। हे माधुर्य। तू मेरे कर्म से अवश्य ही हो, मेरे चित्त में तू प्राप्त होता है। मधु से अधिक मधुर मैं हूँ, मधुभरे पदार्थ से मैं अधिक मधुर हूँ। हे मधु! तू मुझको अवश्य निश्चय से प्राप्त हो, जैसे मधुवाली शाखा का मधु दृष्टि वाला अर्थात् मधु सदृश हो जाऊँ....प्रभु हमें आदेश देते हैं-

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीरनान्वः संमनसस्कृणोमि।। (अथर्व.३-३०-५)

वृद्धजनों वाले तुम एकचित्त होकर और मिलकर कार्यों की सिद्धि करते हुए तथा एकधुर होकर चलते हुए, मत एक दूसरे से वियुक्त होओ। एक दूसरे के प्रति प्रिय मधुर वाक्य बोलते हुए मिला करो, तुम को साथ मिलकर काम करने वाले तथा एक मन वाले मैं करता हूँ। सर्वत्र मधुरता की कामना करते हुए प्रार्थना की गई है-

मधुर नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।। (यजु.१३-२८)

हे परमात्मा! हमारे लिए रात्रि और उषाकाल मधुरतायुक्त हों। पृथिवी की धूल अर्थात् पृथिवी-लोक मधुरता व आनन्द से युक्त हो। पितृ-तुल्य द्युलोक हमारे लिए मधुरतायुक्त हो।

२. सरस्वती -वेदवाणी अर्थात् ज्ञान को सरस्वती कहा गया

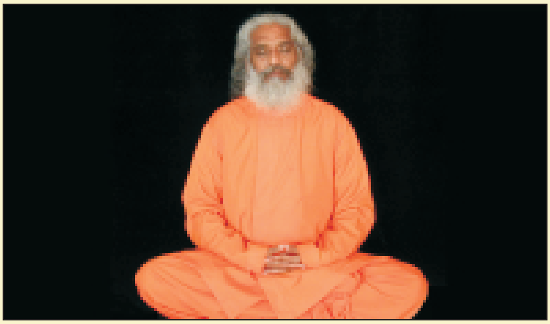

गया है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदोक्तधर्मविषय' के अंतर्गत महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं- 'यह सब मनुष्यों को उचित है कि अपने ज्ञान और विद्या को बढ़ाते हुए एक ब्रह्म ही की उपासना करते रहें। उसके साथ वेदादि शास्त्रों को पढ़ना पढ़ाना भी बराबर करते जाएँ। प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से ठीक-ठीक परीक्षा करके जैसा तुम अपने आत्मा में ज्ञान से जानते हो, वैसा ही बोलो और उसी को मानो। उसके साथ पढ़ना-पढ़ाना भी कभी न छोड़ो। विद्याग्रहण के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम को पूर्ण करे सदा धर्म में निश्चित रहे। अपनी आँख आदि इन्द्रियों को अधर्म और आलस्य से छुड़ा के सदा धर्म में चलाओ। अपने आत्मा और मन को सदा धर्मसेवन में ही स्थिर रक्खो।...वेद और अग्नि आदि पदार्थों से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करो तथा अनेक प्रकार से शिल्पविद्या की उन्नति करो। ....स्वाध्याय जो पढ़ना और प्रवचन जो पढ़ाने का उपदेश किया, सो इसलिए है कि पूर्वोक्त जो धर्म के लक्षण हैं, वे तब प्राप्त हो सकते हैं कि जब मनुष्य लोग सत्यविद्या को पढ़ें, और तभी सदा सुख में रहेंगे क्योंकि सब गुणों में विद्या ही उत्तम गुण है।....धर्म और ईश्वर प्राप्ति करने के लिए नित्य विद्या ग्रहण करो।....तुम लोग सांगोपांग...वेदों को पढ़ो, क्योंकि विद्वानों को ज्ञानमार्ग का प्राप्त होके पृथिवी, आकाश और स्वर्ग ये तीनों प्रकार की विद्या सिद्ध होती है, इससे इन तीनों अग्नि अर्थात् वेदों को श्रेष्ठ कहते हैं। ....ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए जिसके करने की आज्ञा दी है, वही धर्म और जिसके करने की प्रेरणा नहीं की है, वह अधर्म कहाता है।'

धर्म-अधर्म का विवेक केवल परमात्मा प्रदत्त ज्ञान से ही प्राप्त हो सकता है क्योंकि आत्मा का अन्न यथार्थ -ज्ञान ही है। इस आत्मा के अन्न के बारे में महामना याज्ञवल्क्य जी कहते हैं- अन्नं वै त्रयी विद्या। अन्नेनैवैनं पृणाति। अर्थात् आत्मा का शुद्ध अन्न त्रयी विद्या है। यह दुर्भाग्य की ही बात है कि आज आत्मा को शुद्ध अन्न नहीं मिलता है। जिस प्रकार शरीर के अन्न में अनेक प्रकार की मिलावटें आ गई हैं तथा नए-नए रोग बढ़ रहे हैं उसी प्रकार आत्मा के अन्न का भी अभाव है। या तो वह कहीं मिलता नहीं है या फिर मिलता भी है तो उसमें मनुष्यकृत ग्रन्थों की मिलावट है। आत्मा को दूषित करने का कारण यह मिलावट भरा ज्ञान ही है। आज वेद विद्या की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता है। अपने-अपने मत-मजहब या सम्प्रदायों और तथाकथित गुरुओं की बात को प्रमाण मानकर चलने वाले यथार्थ ज्ञान से बहुत दूर जाकर भटक गए हैं। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के स्वाध्याय पर बहुत अधिक बल दिया है और यहाँ पर याज्ञवल्क्य जी भी उसी त्रयी विद्या को आत्मा का अन्न बता रहे हैं। ऐसे अन्न का सेवन करने वाला ही देवता बन जाता है। इसलिए याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि- स्वर्हि गच्छति-अमृतो भवति।

अर्थात् ऐसा देव ही सच्चे सुख को प्राप्त करता है तथा वह अमृत हो जाता है। त्रयी विद्या के अनुकरण से व्यक्ति स्वयं तृप्त हो जाता है, स्थितप्रज्ञ हो जाता है, सन्तोषी हो जाता है। और यदि व्यक्ति आत्मतृप्त नहीं हुआ तो सब कुछ होते हुए भी वह अतृप्त और असंतोषी ही बना रहता है।

३. मही -(मही पूजायाम्) इस दृष्टिकोण से मही का भाव है- परमेश्वर की उपासना करना। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों का 'त्रिताप' के रूप में वर्णन किया है और इनसे छूटने को ही मोक्ष संज्ञा दी है। सांख्यकार का कथन भी है-

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः (१-१) अर्थात् तीन प्रकार के दुःखों की अतिशय निवृत्ति मोक्ष है। इस कथ्य से यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि परमात्मा की प्राप्ति के बिना दुःखों से निवृत्ति नहीं हो सकती है। यजुर्वेद में कहा गया है-

ओ३म् आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्तऽइन्द्र।
याहि वार्युन नियुतो नोऽअच्छा त्वꣳ हि धीमिर्दयसे वि वाजान्।।

(यजु.३३-१८) अर्थात् उपासक को सदा ही ऋत् का पोषक होना चाहिए क्योंकि इससे ही उसके समस्त कार्य सत्य के साथ जुड़े हुए हो सकेंगे। ऐसे स्तोता को प्रभु अपने प्रज्ञान से परिपूर्ण करते हैं। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जानें, वह बड़ों से भी बड़ा और उसके बराबर कोई नहीं है। आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है तथा वह सदा प्रकाशस्वरूप है। अविद्यादि दोषों से दूर है...उसे जाने विना मृत्यु आदि दुःखों से बचना संभव नहीं...बिना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है। उपासना करके ही हम लोक-परलोक को सँवारने में समर्थ हो सकते हैं। यदि इस जन्म में योगाभ्यासादि करके व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त न भी हो सके तो उसका वह श्रम व्यर्थ नहीं जाता बल्कि उपासना के उन संस्कारों के फलस्वरूप उसका अगला जन्म उच्चकुल में होता है। यदि एक जन्म में परमात्मा की उपलब्धि न भी हो तो उपासना के जो संस्कार हमारे सूक्ष्म-शरीर पर पड़ते हैं वह उपलब्धि हमारे साथ-साथ अगले जन्म में भी चली जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी कहा है कि ऐसे व्यक्ति को विद्वान् माँ-बाप प्राप्त होते हैं। श्रीकृष्ण जी ने भी गीता में अर्जुन को यही कहा है कि ये संस्कार जीव के साथ ही जाते हैं जिसके कारण वह न केवल उच्च कुल में जन्म लेता है बल्कि उन संस्कारों के कारण बचपन से ही वैराग्य के भाव उसे योग-मार्ग की ओर स्वतः ही प्रेरित करते हैं....इसलिए उपासक को इस बात से निराश नहीं होना चाहिए कि उसे इस जन्म में ही प्रभु-प्राप्ति नहीं हुई। यह उपासना के संस्कार ही अपने आप में अनुपम उपलब्धि हैं। अपने पूना प्रवचन में महर्षि जी उपासना करने का एक हेतु यह भी देते हैं -'ताकि उपासना के संस्कार पड़ सकें।'

-महर्षि दयानन्दधाम, महादेव, सुरेन्द्रनगर,
जिला मण्डी, हिमाचलप्रदेश १७४४०१

□□□

दृष्टिकोण

तुम मुझे गाय दो, मैं तुम्हें भारत दूँगा

मित्रों शीर्षक पढ़कर चौंकिए मत। मैं कोई नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसा नारा लगाकर उनके समकक्ष बनने का प्रयास नहीं कर रहा। उनके समकक्ष बनना तो दूर यदि उनके अभियान का योद्धा मात्र भी बन सका तो स्वयं को भाग्यशाली समझूँगा।

अभी जो शीर्षक मैंने दिया, वह एक अटल सत्य है। यदि भारत निर्माण करना है तो गाय को बचाना होगा। एक भारतीय गाय ही काफी है सम्पूर्ण भारत की अर्थव्यवस्था चलाने के लिए। किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी की आवश्यकता ही नहीं है। ये कम्पनियाँ भारत बनाने नहीं, भारत को लूटने आई हैं।

खैर अब मुद्दे पर आते हैं। मैं कह रहा था कि मुझे भारत निर्माण के लिए केवल भारतीय गाय चाहिए। यदि गायों का कत्लेआम भारत में रोक दिया जाए तो यह देश स्वतः ही उन्नति की ओर अग्रसर होने लगेगा। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि केवल दस वर्ष का समय चाहिए। दस वर्ष पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था सबसे ऊपर होगी। आज की सभी तथाकथित महाशक्तियाँ भारत के आगे घुटने टेके खड़ी होंगी।

सबसे पहले तो हम यह जानते ही हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि ही भारत की आय का मुख्य स्रोत है। ऐसी अवस्था में किसान ही भारत की रीढ़ की हड्डी समझा जाना चाहिए। और गाय किसान की सबसे अच्छी साथी है। गाय के बिना किसान व भारतीय कृषि अधूरी है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में किसान व गाय दोनों की स्थिति हमारे भारतीय समाज में दयनीय है।

एक समय वह भी था जब भारतीय किसान कृषि के क्षेत्र में पूरे विश्व में सर्वोपरि था। इसका कारण केवल गाय है। भारतीय गाय के गोबर से बनी खाद ही कृषि के लिए सबसे उपयुक्त साधन है। गाय का गोबर किसान के लिए भगवान् द्वारा प्रदत एक वरदान है। खेती के लिए भारतीय गाय का गोबर अमृत है। इसी अमृत के कारण भारत भूमि सहस्रों वर्षों से सोना उगलती आ रही है।

किन्तु हरित क्रान्ति के नाम पर सन् १९६० से १९८५ तक रासायनिक खेती द्वारा भारतीय कृषि को नष्ट कर दिया गया। हरित क्रान्ति की शुरुआत भारत की खेती को उन्नत व उत्तम बनाने के लिए की गयी थी। किन्तु इसे शुरू करने वाले आज किस निष्कर्ष

तक पहुँचे होंगे?

रासायनिक खेती ने धरती की उर्वरा शक्ति को घटा कर इसे बाँझ बना दिया। साथ ही साथ इसके द्वारा प्राप्त फसलों के सेवन से शरीर न केवल कई जटिल बीमारियों की चपेट में आया बल्कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घटी है।

वहीं दूसरी ओर गाय के गोबर से बनी खाद से हमारे देश में हजारों वर्षों से खेती हो रही थी। इसका परिणाम तो आप भी जानते ही होंगे। किन्तु पिछले कुछ दशकों में ही हमने अपनी भारत माँ को रासायनिक खेती द्वारा बाँझ बना डाला।

इसी प्रकार खेतों में कीटनाशक के रूप में भी गोबर व गौ-मूत्र के उपयोग से उत्तम परिणाम वर्षों से प्राप्त किये जाते रहे। गाय के गोबर में गौ-मूत्र, नीम, धतूरा, आक आदि के पत्तों को मिलाकर बनाए गए कीटनाशक द्वारा खेतों को किसी भी प्रकार के कीड़ों से बचाया जा सकता है। वर्षों से हमारे भारतीय किसान यही करते आए हैं। किन्तु आज का किसान तो बेचारा रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव करते हुए स्वयं ही अपने प्राण गँवा देता है। कई बार किसान कीटनाशकों की चपेट में आकर मर जाते हैं। जरा सोचिये कि जब ये कीटनाशक इतने खतरनाक हैं तो पिछले कई दशकों से हमारी धरती इन्हें कैसे झेल रही होगी?और इन कीटनाशकों से पैदा हुई फसलें जब भोजन के रूप में हमारी थाली में आती हैं तो क्या हाल करती होंगी हमारा?

केवल चालीस करोड़ गौवंश के गोबर व मूत्र से भारत में चौरासी लाख एकड़ भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है। किन्तु रासायनिक खेती के कारण आज भारत में १९० लाख किलो गोबर के लाभ से हम भारतवासी वंचित हो रहे हैं।

किसी भी खेत की जुताई करते समय चार से पाँच इंच की जुताई के लिए बैलों द्वारा अधिकतम पाँच होर्स पावर शक्ति की आवश्यकता होती है। किन्तु वहीं ट्रैक्टर द्वारा इसी जुताई में ४० से ५० होर्स पावर के

ट्रैक्टर की आवश्यकता होती है। अब ट्रैक्टर व बैल की कीमत के अंतर को बहुत सरलता से समझा जा सकता है वहीं ट्रैक्टर में काम आने वाले डीजल आदि का खर्चा अलग है। इसके अतिरिक्त भूमि के पोषक जीवाणु ट्रैक्टर की गर्मी से व उसके नीचे दबकर ही मर जाते हैं।

इसके अलावा खेतों की सिंचाई के लिए बैलों के द्वारा चालित पम्पिंग सेट और जनरेटर से ऊर्जा की आपूर्ति भी सफलता पूर्वक हो रही है। इससे अतिरिक्त बाह्य ऊर्जा में होने वाला व्यय भी बच गया। यदि भारतीय कृषि में गौवंश का योगदान मिले तो आज भी भारत भूमि सोना उगल सकती है। सदियों तक भारत को सोने की चिड़िया बनाने में गाय का

ही योगदान रहा है।

ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में भी पशुधन का उपयोग लिया जा सकता है। आज भारत में विद्युत ऊर्जा उत्पादन का करीब ५६ प्रतिशत थर्मल पावर से, १६ प्रतिशत जलविद्युत से, ३ प्रतिशत परमाणु ऊर्जा से व १ प्रतिशत पवन ऊर्जा के द्वारा हो रहा है।

थर्मल पावर प्लांट में विद्युत उत्पादन के लिए कोयला, पैट्रोल, डीजल व प्राकृतिक गैस का उपयोग किया जाता है। इसके उपयोग से कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन वातावरण में हो रहा है जिससे वातावरण के दूषित होने से भिन्न भिन्न प्रकार के रोगों का जन्म अलग से हो रहा है।

जलविद्युत परियोजनाएँ अधिकतर भूकंपीय क्षेत्रों में होने के कारण यहाँ भी खतरे की घंटी है। ऐसे में किसी भी बाँध का टूट जाना करोड़ों लोगों को प्रभावित कर सकता है। टिहरी बाँध के टूटने से चालीस करोड़ लोग प्रभावित होंगे।

परमाणु ऊर्जा के उपयोग का एक भयंकर परिणाम तो हम अभी कुछ समय पहले जापान में देख ही चुके हैं। परमाणु विकिरणों के दुष्प्रभाव को कई दशकों बाद भी देखा जाता है।

जबकि यहाँ भी गौवंश का योगदान लिया जा सकता है। स्व. श्री राजीव भाई दीक्षित अपने पूरे जीवन भर इस अनुसन्धान में लगे रहे व सफल भी हुए। उनके द्वारा बनाए गए गोबर गैस संयन्त्र से गोबर गैस को सिलेंडरों में

भरकर उसे ईंधन के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है। आज एक साधारण कार को पैट्रोल से चलाने में करीब चार रुपये प्रति किलोमीटर के हिसाब से खर्च होता है। जिस प्रकार से पैट्रोल, डीजल के दाम बढ़ रहे हैं, यह खर्च आगे और भी बढ़ेगा वहीं दूसरी ओर गोबर गैस के उपयोग से उसी कार को

३५ से ४० पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से चलाया जा सकता है।

आईआईटी दिल्ली, कानपुर गौशाला और जयपुर गौशाला अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा एक किलो सी.एन.जी. से २५ से ४० किलोमीटर एवरेज दे रही तीन गाड़ियाँ चलाई जा रही हैं। रसोई गैस सिलेंडरों पर भी यह बायोगैस बहुत कारगर सिद्ध हुई है। सरकार की भ्रष्ट नीतियों के चलते आज रसोई गैस के दाम भी आसमान तक पहुँच गए हैं, जबकि गोबर गैस से एक सिलेंडर का खर्च केवल ५० से ७० रुपये तक आँका गया है।

इसी बायोगैस से अब हैलीकॉप्टर भी जल्द ही चलाया जा सकेगा। हम इस अनुसन्धान में अब सफलता के बहुत करीब हैं। गोबर गैस प्लांट से करीब सात करोड़ टन लकड़ी बचाई जा सकती है, जिससे करीब साढ़े तीन करोड़ पेड़ों को जीवन दान दिया जा सकता है। साथ ही करीब तीन करोड़ टन उत्सर्जित कार्बन डाई आक्साइड को भी रोका जा सकता है।

पैट्रोल, डीजल, कोयला व गैस तो सब प्राकृतिक स्रोत हैं, किन्तु यह बायोगैस तो कभी न समाप्त होने वाला स्रोत है। जब तक गौवंश है, तब तक हमें यह ऊर्जा मिलती रहेगी। हाल ही में कानपुर की एक गौशाला ने एक ऐसा सीऍफएल बल्ब बनाया है जो बैटरी से चलता है। इस बैटरी को चार्ज करने के लिए गौमूत्र की आवश्यकता पड़ती है। आधा लीटर गौमूत्र से १७ घंटे तक सीऍफएल जलता रहेगा। यदि सरकार चाहे तो इस क्षेत्र में सकारात्मक कदम उठाकर इससे भारी मुनाफा कमाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त चिकित्सा के क्षेत्र में तो भारतीय गाय के योगदान को कोई झुठला ही नहीं सकता। हम भारतीय गाय को ऐसे ही माता नहीं कहते। इस पशु में वह ममता है जो हमारी माँ में है। भारतीय गाय की रीढ़ की हड्डी में सूर्यकेतु नाड़ी होती है। सूर्य के सम्पर्क में आने पर यह स्वर्ण का उत्पादन करती है। गाय के शरीर से उत्पन्न यह सोना गाय के दूध, मूत्र व गोबर में भी होता है।

अक्सर हृदय रोगियों को घी न खाने की सलाह डॉक्टर देते रहते हैं। साथ ही एलोपैथी में हृदय रोगियों को दवाई में सोना ही कैप्सूल के रूप में दिया जाता है। यह चिकित्सा अत्यन्त महंगी साबित होती है। जबकि आयुर्वेद में हृदय रोगियों को भारतीय गाय के दूध से बना शुद्ध घी खाने की सलाह दी जाती है। इस घी में विद्यमान स्वर्ण के कारण ही गाय का दूध व घी अमृत के समान हैं। गाय के दूध का प्रतिदिन सेवन अनेकों बीमारियों से दूर रखता है।

गौ मूत्र से बनी औषधियों से कैंसर, ब्लडप्रेशर, अर्थराइटिस, सर्वाइकल, हड्डी सम्बन्धित रोगों का उपचार भी संभव है। ऐसा कोई रोग नहीं है, जिसका इलाज पंचगव्य से न किया जा सके। यहाँ तक कि हवन में प्रयुक्त होने वाले गाय के घी व गोबर से निकलने वाले धुँए से प्रदूषण जनित रोगों से बचा जा सकता है। हवन से निकलने वाली गैसों में इथीलीन आक्साइड, प्रोपीलीन आक्साइड व फॉर्मएल्डीहाइड गैसें प्रमुख हैं।

इथीलीन आक्साईड गैस जीवाणु रोधक होने पर आजकल आपरेशन थियेटर से लेकर जीवन रक्षक औषधियों के निर्माण में प्रयोग मे लायी जा रही है वहीं प्रोपीलीन आक्साइड गैस का प्रयोग कृत्रिम वर्षा कराने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है। साथ ही गाय के दूध से रेडियो एक्टिव विकिरणों से होने वाले रोगों से भी बचा जा सकता है। यदि सरकार वैदिक शिक्षा पर कुछ शोध करे तो दवाइयों पर होने वाले करीब दो लाख पचास हजार करोड़ के खर्चे से छुटकारा पाया जा सकता है।

अब आप ही बताइये कहने को तो गाय केवल एक जानवर है, किन्तु इतने कमाल का एक जानवर क्या हमें ऐसे ही बूचड़खानों में तड़पती मौत मरने के लिए छोड़ देना चाहिए? कुछ तो कारण है जो हजारों वर्षों से हम भारतीय गाय को अपनी माँ कहते आए हैं। भारत निर्माण में गाय के अतुलनीय योगदान को देखते हुए शीर्षक की सार्थकता में मुझे यही शीर्षक उचित लगा।

(अंतर्जाल लेख)

समाचार

महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे-दयानन्द

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा व आर्य समाज विज्ञाननगर कोटा के संयुक्त तत्वावधान में विश्व महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला सभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा थे। उन्होंने महिलाओं के उत्थान में ऋषि दयानन्द के योगदान को रेखांकित किया। इस अवसर पर डॉ. के.एल. दिवाकर, श्री जे.एस.दूबे ने भी उद्‌बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम के संयोजक राकेश चड्ढा ने सभी का आभार प्रकाशित किया।

-अरविन्द पाण्डेय

महर्षि दयानन्द जयन्ती मनाई गई।

७ मार्च को जिला सभा कोटा के तत्वावधान में भव्य रूप से ऋषि जयन्ती का आयोजन हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता थे। इस अवसर पर श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भटकती मानव जाति को पतन की पराकाष्ठा के वक्त में बचाने का काम स्वामी जी ने किया। इस अवसर पर नगर की विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

-अर्जुन देव चड्ढा

विश्वशांति एवं मानव कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

जयपुर मानसरोवर कॉलोनी के डे-केयर सेन्टर में वरिष्ठजनों की संस्था सीनियर सिटीजन फोरम द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ.रामपाल विद्याभास्कर और डॉ.सुमित्रा के वेदोपदेश होते रहे। कार्यक्रम के संयोजक श्री यशपाल यश ने ऋषि के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला। श्री यादराम, जवाहरलाल वधवा आदि के मधुर भजन भी हुए।

-ईश्वर दयाल माथुर

होलिकोत्सव प्रेरणा पर्व के रूप में मनाया गया।

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर एवं उदयपुर पर्यावरण समिति की ओर से नवसस्येष्टि पर्व श्री इन्द्रप्रकाश यादव के पौरोहित्य में पंचकुण्डीय यज्ञ के आयोजन के साथ प्रेरणा पर्व के रूप में मनाया गया। मुख्य अतिथि डॉ. प्रो.प्रेमचन्द गुप्त ने पर्व विशेष के महत्व को रेखांकित किया वहीं अध्यक्षीय उद्‌बोधन में पूर्व वन संरक्षक डॉ. एस.के.वर्मा ने पर्यावरण सन्तुलन में यज्ञ की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

-भूपेन्द्र शर्मा

दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर का वार्षिकोत्सव सोत्साह सम्पन्न

आर्य समाज हिरणमगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिकोत्सव लायन्स क्लब मेवाड गौरव के अध्यक्ष श्री महेश शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बिटिया की समाज में सकारात्मक भूमिका को उकेरने वाला नाटक 'नई रोशनी' सराहनीय रहा। प्रो. डॉ.अमृतलाल तापड़िया ने विद्यालय की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। विद्यालय के मंत्री श्री के.के.सोनी ने वार्षिक प्रतिवेदन एवं मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिन्धी ने आभार प्रकाशित किया। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया।

आर्य समाज, पिछोली उदयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

प्रकाश श्रीमाली

सत्र २०१३-१४ के लिए आर्य समाज, पिछोली उदयपुर के वार्षिक चुनाव डॉ. अमृतलाल तापड़िया द्वारा दिनांक ७.४.१३ को सम्पन्न कराए गए। निर्वाचित सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई।

सुरेश चन्द्र चौहान

शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द का लोकार्पण

प्रख्यात् साहित्यकार एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया के सद्यः प्रकाशित उक्त ग्रन्थ का लोकार्पण मूर्धन्य संन्यासी स्वामी डॉ. आर्येशानन्द सरस्वती (मनन आश्रम पिण्डवाडा, राजस्थान) ने किया। इस अवसर पर शुद्धि समाचार के सम्पादक श्री हरबंस लाल कोहली, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इस ग्रन्थ के प्रकाशक डॉ. अनिल आर्य एवं प्रख्यात् वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाज सेवी श्री के.एल.गुप्ता ने की। मुख्य अतिथि के रूप में टंकारा ट्रस्ट के मंत्री व वयोवृद्ध आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल भी उपस्थित थे।

आर्य समाज, रामनगर रुड़की ने आर्य नेताओं को स्मरण किया

आर्य समाज, रामनगर रूड़की ने अपनी सक्रियता को प्रदर्शित करते हुए माह मार्च में दिनांक ६.३.१३ को आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम जी की पुण्य तिथि ७.३.१३ को महर्षि दयानन्द जी की जयन्ती १६.३.१३ को पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्यतिथि २३.३.१३ को सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान दिवस और दिनांक ३०.३.१३ को महान् क्रान्तिवीर ऋषिवर के प्रिय शिष्य डॉ. श्याम जी कृष्ण वर्मा की पुण्य स्मृति को भव्यता के साथ मनाया। इस अनुकरणीय सक्रियता हेतु आर्य समाज के सभी पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

-तेजपाल सिंह आर्य, रामनगर, रूड़की

श्री हजारी लाल आर्य, डी.डी.जी. अवार्ड से सम्मानित

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के पूर्व उप प्रधान एवं कार्यालय अधीक्षक, एनसीसी, श्री हजारी लाल आर्य को उत्कृष्ट कार्य हेतु डी.डी. जी. अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री आर्य के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

शाहपुरा आर्य समाज का १३८ वां स्थापना दिवस भव्यता के साथ मनाया गया। प्रमुख शिक्षाविद् श्री राजेन्द्र प्रसाद डांगी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में श्री हीरालाल आर्य, श्री सोहन लाल शारदा आदि ने उद्‌बोधन प्रदान किया।

-सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री

आर्य वीरांगना शिविर का आयोजन

वैदिक बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदर्श नगर, जयपुर में ११ मई से १६ मई २०१३ तक बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण हेतु उक्त शिविर का आयोजन आर्य वीरांगना दल, राजस्थान प्रदेश के नेतृत्व में और सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ.उत्तमा यति के निर्देशन में आयोज्य है।

-सत्यार्थ दूत सरोज आर्या वर्मा, संचालिका, राजस्थान आर्य वीरांगना दल
चलभाष- ०९४१३४१८५२९, ०९६७२२८६८६३

वज्रपात

अत्यन्त दुःख की बात है कि आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् प्रसिद्ध वेदविद्, अनेक पुस्तकों के प्रणेता डॉ.रामनाथ वेदालंकार जी का निधन ८ अप्रैल २०१३ को ९६ वर्ष की अवस्था में हो गया। एक-एक करके पुरानी पीढ़ी के सिद्धान्त निष्णात् महात्मा काल कलवित होते जा रहे हैं। पर विधाता का विधान होने से इसमें किया ही क्या जा सकता है। पर यह सुनिश्चित है कि डॉ. रामनाथ जी के रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव प्रायः है। न्यास परिवार एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि इस विशिष्ट आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान दे और आर्यों को ऐसा वातावरण सृजित करने की सद्‌बुद्धि प्रदान करे कि रामनाथ जी की ही परम्परा के उद्‌भट ऋषिभक्त निर्भीक तथा निष्पक्ष विद्वान् तैयार हो सकें। अनेकों अन्य पुस्तकों के साथ उनके द्वारा लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश की समीक्षा' पठनीय है।

बुढ़ापे में भी रहें चुस्त-दुरुस्त

७० साल की उम्र में भी दिमाग ठीक से काम कर सके और डिमेनशिया यानी भूलने जैसी बीमारी ना हो इसके लिए जरूरी है व्यायाम करना।

लेकिन, बुढ़ापे में दिमाग दुरुस्त रखने के लिए जरूरी नहीं कि दिमागी कसरत ही की जाए। ७० की उम्र में रोजाना शारीरिक व्यायाम भी दिमाग को दुरुस्त रख सकता है।

ब्रिटेन में सेवानिवृत्त हो चुके ६६८ लोगों पर तीन वर्षों तक किए गए एक अध्ययन में पता चला है कि वे लोग जो शारीरिक रूप से क्रियाशील हैं, उनके दिमाग में किसी तरह का संकुचन नहीं होता और उम्र अपना असर नहीं दिखाती।

शोधकर्ताओं ने जब ७० वर्ष के लोगों के दिमाग के सफेद हिस्से (दिमाग का वो हिस्सा जो पूरी खोपड़ी में किसी संदेश को पहुँचाने का काम करता है) का अध्ययन किया तो पाया कि जो लोग लगातार शारीरिक रूप से क्रियाशील थे, उनके दिमाग को कम क्षति पहुँची थी बजाय उनके जो लोग कम क्रियाशील थे।

विशेषज्ञ मानते हैं कि बढ़ती उम्र के साथ दिमाग की स्थिति कमजोर होती चली जाती है, जिनमें भूलने की आदत से लेकर सोचने की क्षमता तक शामिल है। लेकिन शारीरिक व्यायाम करते हुए इन लक्षणों को कम किया जा सकता है। दरअसल कसरत से हमारे शरीर में खून का प्रवाह बरकरार रहता है जो दिमाग को ऑक्सीजन और दूसरे पोषक तत्व देता है।

ब्रिटेन के प्रमुख शोधकर्ता साइमन रिडले कहते हैं, ''ये अध्ययन बताता है कि शारीरिक व्यायाम करने वालों के दिमाग पर बढ़ती उम्र का असर कम होता है।''

ऋषिबोध पर्व मनाया गया

आर्य समाज बारां में तीन दिवसीय ऋषि बोध पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रख्यात् वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के मंत्र मुग्ध कर देने वाले प्रवचनों के साथ बिजनौर से पधारे भजनोपदेशक कुलदीप आचार्य ने भी श्रोताओं को अपने भजनों द्वारा तरंगित किया। इस अवसर पर आचार्य वेदप्रिय शास्त्री व जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा भी उपस्थित थें। श्री अर्जुन देव चड्ढा का इस अवसर पर सम्मान किया गया।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, मानसरोवर, जयपुर के वार्षिक चुनाव डॉ.रामपाल विद्याभास्कर के निर्देशन में सम्पन्न हुए। प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष पद का दायित्व क्रमशः श्री अर्जुन देव कालरा, श्री सुरेश साहनी एवं श्री ओमप्रकाश गुप्ता को दिया गया। निर्वाचित समस्त अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शुभकामनाएँ।

रामनवमी का पर्व मनाया गया

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर में रामनवमी का पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें श्री इन्द्रदेव पीयूष, श्रीमती सुमन उज्ज्वल व श्री विनोद राठौड़ ने अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को भक्तिरस में सराबोर किया। पश्चात् श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने श्री राम के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

-श्री रामदयाल मेहरा

प्रतिस्वर

आदरणीय सम्पादक जी,

आप द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' इस गुरुकुल में नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। पत्रिका में प्रकाशित लेख अनुकरणीय हैं और विषय सामग्री भी आजकल की ज्वलन्त समस्याओं पर आधारित है। 'क्यों आए इस देश में लाडो' (आत्म निवेदन) और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री जाति का उत्थान' लेखक प्राचार्य देवदत्त तुंगार(महाराष्ट्र) फरवरी मास की पत्रिका में प्रकाशित ये दो लेख अति सराहनीय हैं। हमने आपकी इस पत्रिका को गुरुकुल की लाइब्रेरी में यथास्थान रखवा दिया है ताकि शास्त्री खण्ड की छात्राएँ इन लेखों का पढ़ें और प्रेरणा लें। मैं पत्रिका भेजने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

नीतिज्ञा नियतिज्ञा वेदज्ञा अपि भवन्ति शास्त्राज्ञाः।
ब्रह्मज्ञा अपि लभ्या स्वाज्ञानशानिनो विरला।।

अर्थात नीतिशास्त्री के पंडित ज्योतिषी चतुर्वेदी, शास्त्री और ब्रह्मज्ञानी बहुत मिलते हैं परन्तु अपने अज्ञान को समझने वाले बिरले ही मिलते हैं। त्रुटि के लिए क्षमा

-सूबेदार मेजर रिटायर्ड एन.आर.डांगी

सत्यार्थ सौरभ का १० वां अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम 'माँ का गौरव' श्री निदा फाजली की प्रस्तुति पढ़कर भाव विभोर हो गया। पृष्ठ ४ पर महाशयश्री धर्मपाल जी के ९० वें जन्म दिवस पर बधाई संदेश पढ़ा जो कि कर्मठ आर्य मनीषी दानवीर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करती है। देशद्रोहियों पर चर्चा में खुलकर विवरण जानकारियों का पुलिन्दा पढ़ा। जन्म तिथि पर महर्षि दयानन्द का सार्वभौमिक (लेखक- आचार्य रामवीर शास्त्री, अरुणेश) व महर्षि के जीवन की घटनाओं की चित्रों द्वारा प्रस्तुति भी ज्ञान वर्धक रही। समाचाार के स्तम्भ में पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी को विशिष्ट वेदांग पुरस्कार से सम्मानित तथा उनके प्रयास से शराब का कारखाना बन्द होने का समाचार पढ़ा। भ्रूण हत्या, शहीद भगतसिंह, आम आदमी पर देवरों की मार, मधुमेह के प्रति आगाह तथा काव्य सुधा में बोधरात्रि की उपयोगिता एवं सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता का गीत नोट करने लायक लगा। डॉ. मिर्जा हसन नासिर की कुछ पंक्तियाँ बहुत अच्छी लगीं। वास्तव में आपका अवर्णनीय प्रयास पत्रिका को नए आयाम तक पहुँचायेगा। आपके प्रयास व परिश्रम के लिए हृदय से आभार व धन्यवाद करता हूँ।

विनम्र अपील के विषय में मेरा सुझाव है कि प्रत्येक ऋषि भक्त से नम्र निवेदन है कि वह कम से कम १०० रु. (अधिक तो कितना भी दे) कम से कम तो देकर इस यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करनी चाहिए। मुझे नहीं पता बैंक में सीधा इतनी राशि जमा लेंगे या नहीं। यह सुविधा बैंक से करवा कर आगामी में यह अपील पुनः निकालें। छोटी रकम देने वाला सीधा न्यास से जुड़ेगा तथा गौरव अनुभव करेगा सुविधाजनक भी रहेगा ज्यादा से ज्यादा आर्यजन न्यास से जुड़ें मेरी सोच है। आप परिवर्तन भी कर सकते हैं। यह मेरी निजी राय है।

योग्य सेवा हो सो लिखें। पत्रिका में दानियों की सूची भी प्रकाशित करें ताकि अन्यों को प्रोत्साहन मिले इसके लिए कितनी राशि दानदाताओं के नाम प्रकाशित होंगे यह निश्चित कर सकते हैं। धन्यवाद । आपके दीर्घायु एवं सुन्दर स्वास्थ्य की कामना सहित।

-राजेन्द्र आर्य हाँसीवाला, दिल्ली

जयन्ती पर विशेष

चार लाख रु. का इनामी देशभक्त

ज़रा याद इन्हें भी करलो

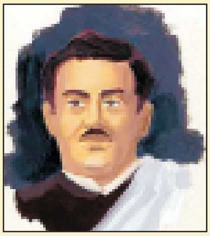

प्रायः हम लोग इस बात का अंदाजा नहीं लगा पाते कि जिस स्वतंत्र वातावरण में आज हम हैं, उसकी प्राप्ति अनगिनत लोगों की कुर्बानी के पश्चात् हुई है, जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान करके देश को स्वतंत्रता प्राप्त कराई। आज की पीढ़ी उनके बारे में जानती भी नहीं है। रास बिहारी बोस एक ऐसा ही नाम है जिन्होंने अपना सारा जीवन भारत माता की स्वतंत्रता के निमित्त अर्पित कर दिया। रास बिहारी का जन्म वर्धमान जिले के सुभलदा ग्राम में २५ मई १८८६ के दिन हुआ। इनकी स्कूली पढ़ाई चन्दन नगर में ही हुई। पश्चात् आप देहरादून में फोरेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट में हेड क्लर्क के पद पर काम करने लगे।

वहाँ वे बंगाल के अनेक क्रान्तिकारियों के संपर्क में आये और

बाद में उत्तरप्रदेश व पंजाब के अनेक आर्य समाजी देशभक्तों से उनका सघन संपर्क रहा। फोरेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट में केमिकल्स इत्यादि के साथ काम करते हुए संभवतः आपको बम बनाने की कला प्राप्त हुई। जिस समय दिल्ली में लार्ड हार्डिंग की सवारी की योजना ब्रतानी सरकार ने बनाई ताकि वे भारतीयों पर अपना दबदबा जमा सकें उस समय रासबिहारी बोस ने वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई। ब्रिटिश हुकूमत के सर्वोच्च अधिकारी पर सहस्रों लोगों की भीड़ में बम फेंकना कोई आसान काम नहीं था। देहरादून में रहते हुए ही सिगरेट के टीन में बम बनाकर हाथी और उस पर बैठे हुए आदमी की ऊँचाई का अनुमान लगाकर अपने साथी विश्वास को उस पर डिब्बा फेंकने की प्रेक्टिस कराई। विश्वास मात्र सोलह साल का बहुत सुन्दर दिखने वाला लड़का था।

२३ दिसम्बर १९१२ को चान्दनी चौक में जिस समय हार्डिंग की सवारी आने वाली थी और ऊपर छज्जों पर महिलाओं की भीड़ जमी हुई थी इन्होंने बसन्त विश्वास को साड़ी पहनाकर उनके बीच में बिठा दिया और नीचे एक तरफ ये स्वयं और दूसरी ओर अवध बिहारी डट गए। जब वायसराय की सवारी आई तभी अचानक इनको ध्यान आया कि इन्होंने डिब्बा फेंकने की प्रेक्टिस तो नीचे से ऊपर की ओर कराई थी अतः यह भागकर ऊपर गए तथा विश्वास से लड़की का वेश उतरवाकर उसे नीचे लेकर आ गये। ठीक ११.४५ बजे बम वायसराय पर फेंका गया। वायसराय का अटेण्डर वहीं मर गया व वायसराय को गहरी चोटें आईं। वायसराय की पत्नी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा । ये तीनों वहाँ से फरार हो गए।

रासबिहारी उसी रात रेल पकड़कर देहरादून आ गए और अगले दिन एक बैठक बुलाकर उसमें वायसराय पर हुए हमले की घोर निन्दा की। उस समय कौन सोच सकता था कि जो व्यक्ति वायसराय पर हमले की निन्दा कर रहा है वही उस हमले का सूत्रधार था। रासबिहारी पर चार लाख रु. का ईनाम घोषित हुआ परन्तु ये अपने आपको बचाने में सफल रहे। अवध बिहारी व बसन्त विश्वास पकड़े गए तथा उन्हें फाँसी की सजा हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध, गदर क्रान्ति और रासबिहारी बोस

सन् १९१४ में प्रथम विश्व युद्ध के समय इंग्लैण्ड की सैनिक ताकत बाहर लगी होगी उस समय विद्रोह के लिए सर्वाधिक अनुकूल वातावरण होगा यह सोचकर रास बिहारी बोस अन्य उन सभी गदर तत्वों के संपर्क में आये जो कि बाहर से सहस्रों की संख्या में भारत आ चुके थे। जो अपने साथ कुछ हथियार व पैसा भी लेकर आये थे। अमेरिका में प्रशिक्षित विष्णु गणेश पिंगले ने रासबिहारी से नेतृत्व की जिम्मेदारी लेने को कहा। संपूर्ण योजना बना ली गई। अनेक सैनिक छावनियों में गदर के सिपाहियों ने

अपनी जगह बना ली। २१ फरवरी १९१५ इस क्रांति के लिए तय की गई। परन्तु जैसाकि १८५७ में मंगल पाण्डे से जल्दबाजी हो गई उसी प्रकार २१ फरवरी से पहले १५ फरवरी को एक सैनिक कृपालसिंह पकड़ा गया और सारी योजना विनष्ट हो गई। रास बिहारी बोस जैसे तैसे बचते हुए जापान पहुँचे और वहाँ इन्होंने अपना स्थान बनाया। वहीं जापानी लडकी तोशको से इन्होंने विवाह किया। साउथ एशिया में काम कर रहे सभी हिन्दुस्तानी देशभक्तों को

जोड़ने का कार्य रासबिहारी ने तेजी से किया। जापान सरकार का रुख भी हिन्दुस्तान की ओर मोड़ने में रासबिहारी ने आंशिक सफलता प्राप्त की। टोकियो में २८ मार्च १९४२ को भारतीय स्वतंत्रता लीग की स्थापना की, जो कि बाद में १ सितम्बर १९४२ को आजाद हिन्द फौज के रूप में जानी जाने लगी और रास बिहारी ने नेताजी सुभाषचन्द्र को इसकी अध्यक्षता हेतु आमंत्रित किया। २१ जनवरी १९४५ को इस महान् देश भक्त ने इस नश्वर संसार से विदा ली परन्तु अंतिम सांस तक अनेक बार असफल रहने के बावजूद भी इन्होंने हिम्मत नहीं खोई। उनका कहना था "आई वाज ए फाइटर वन फाइट मोर द लास्ट एंड द बेस्ट" और आजाद हिन्द फौज की स्थापना के रूप में इन्होंने यह कर दिखाया। सभी देशभक्तों को एक मंच पर लाने का उनका नारा था "रिमेम्बर आवर मोटो इज सेम- वन नेशन इंडिया, वन एनिमी इंग्लैण्ड, वन गोल फ्रीडम।"

(आधार- श्री मन्मथनाथ गुप्त)

संकलनकर्ता- दिलीप पंवार, उदयपुर

□□□

डॉ.पूर्ण सिंह डबास को साहित्य कृति सम्मान

जाने माने साहित्यकार व आर्य समाज, साकेत के प्रधान डॉ.पूर्ण सिंह डबास ने आर्य समाज साकेत में कई नई योजनाएँ शुरू की हैं जिनमें वैदिक साहित्य का प्रकाशन मुख्य है। डॉ.डबास को उनकी हास्य व्यंग्य रचना 'दुर्गति मैदान' के लिए इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती दिल्ली द्वारा 'जेनेन्द्र कुमार साहित्य' से सम्मानित किया गया। डॉ. डबास ने भाषा विज्ञान के क्षेत्र में 'हिन्दी में देशज शब्द' तथा 'हिन्दी का अनुकरणात्मक शब्द कोष' जैसी पुस्तकों का प्रणयन किया है। डॉ.डबास बीजिंग विश्वविद्यालय(चीन) में विजिटिंग प्रो.रहे हैं। इस सम्मान के अवसर पर डॉ. डबास को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हो रही है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ सौरभ' पत्रिका के सदस्य बनें और बनाने की कृपा करें।

बाल वाटिका

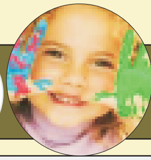

पानी की कमाई पानी में

विकासपुर गाँव में रामधन नाम का ग्वाला रहता था। वह शहर जाकर दूध बेचता था। वह शुद्ध दूध देने में विश्वास करता था। दूध के दाम कम होने के कारण उसे दो समय की रोटी में भी मुश्किल होती थी। एक दिन उसका एक रिश्तेदार घर आया। वह धोखेबाज था। उसने रामधन से कहा- 'तुम दूध में पानी क्यों नहीं मिलाते?सभी दूधवाले तो मिलाते हैं।' रामधन ने कानों पर हाथ लगाते हुए कहा, 'तौबा, मैं यह पाप नहीं करूँगा।' रिश्तेदार ने कहा, 'पाप की बात कहाँ से आई। थोड़ा पानी मिलाओगे तो पैसे अधिक आएँगे।' रामधन की पत्नि ने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, 'थोड़े पैसे ज्यादा आएँगे तो अच्छी तरह जी लेंगे। नहीं तो अभाव में पूरा जीवन निकल जाएगा।' अब तो रामधन की बुद्धि भी फिर गई। यह दूध और आधा पानी मिलाकर बेचने लगा। ग्राहक उसपर विश्वास करते थे इसलिए उन्हें पता ही नहीं लगा। अब रामधन के पास एक थैली भरकर धन जमा हो गया। उसकी पत्नि ने कहा, 'बाजार जाकर कपड़े खरीद लाओ।' पत्नि ने रास्ते के लिए खाना बाँध दिया। रामधन को रास्ते में भूख लगी। पास में ही एक नदी थी। उसने सोचा पहले नहा ले, उसके बाद खाना खा लेगा। उसने नदी के किनारे पैसों की थैली और कपड़े रखे और पानी में कूद गया। नहाने के बाद उसने वहीं बैठकर खाना खाया और चलने को हुआ तो देखा कि थैली वहाँ नहीं थी। वह घबरा गया। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो देखा कि एक बंदर थैली लेकर पेड़ पर बैठा था। उसने थैली वापस लेने के बहुत प्रयास किए पर कोई फायदा नहीं हुआ। हारकर वह उसी पेड़ के नीचे बैठ गया। बंदर ने थैली खोली और उसमें भरे सिक्कों को चबाकर फेंकने लगा। कुछ सिक्के पानी में गिरे तो कुछ जमीन पर। कुछ सिक्के बेकार हो गये थे। जमीन पर गिरे सिक्कों को रामधन ने इकट्ठा किया और वहाँ से चल दिया। उसने सिक्के गिने तो जितने थैली में थे उसके आधे ही निकले। रामधन ने सिर पीट लिया। वह सोचने लगा, 'पानी की कमाई पानी में ही चली गई। यदि दूध में पानी नहीं मिलाता तो ऐसा नहीं होता।' इसके बाद रामधन कभी भी मिलावट न करने की शपथ लेते हुए घर लौट आया।

साभार-राजस्थान पत्रिका

ब्राह्मण ग्रन्थों में अद्भुत विज्ञान

लेखक- स्वामी वेदानन्द सरस्वती

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

अपनी बात को हम ऐतरेय ब्राह्मण के एक आख्यान से आरम्भ करते हैं। देवों और असुरों में युद्ध चल रहा था। असुरों को परास्त करने की कामना से देवों ने सोमयाग का समायोजन किया। सोम द्यौलोक से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि (सोमो ह वै दिविश्रितः) सोम द्यौ लोक में ही रहता है। देवों ने द्यौलोक से सोम लाने के लिये छन्दों से कहा। पहले सभी छन्द चतुष्पदा थे। छन्दों में से जगती छन्द सर्वप्रथम द्यौलोक से सोम लाने के लिये पक्षी बन करके आकाश में उड़ा। किन्तु वह द्यौ लोक तक न पहुँच सका। थकान के कारण मध्य से वापिस लौट आया और अपने तीन पाद भी मार्ग में ही छोड़ आया। एक पद को लेकर अपना अस्तित्व बचाकर वापिस आया। फिर देवों ने त्रिष्टुप् को भेजा। किन्तु त्रिष्टुप् भी द्यौलोक तक न पहुँच सका। वह भी थकान से मार्ग के मध्य से ही लौट आया और अपना एक पद भी मार्ग में ही छोड़ आया। अन्त में गायत्री छन्द ने उड़ान भरी। वह द्यौलोक तक पहुँच गया। वहाँ से वह सोम को ले आया। साथ में जगती के तीन तथा त्रिष्टुप के एक पद को भी मार्ग से उठा लाया। अब गायत्री के पास ४ अपने + ३ जगती के + १ त्रिष्टुप् का मिला कर कुल ८ पद हो गये। इन ८ पदों को मिलाकर गायत्री ने अपने एक पाद में रखा। इस अष्टाक्षरी गायत्री से देवों ने सोमयाग का प्रातः सवन पूरा किया। माध्यन्दिन सवन के लिये त्र्यक्षरा त्रिष्टुप् छन्द आगे आया। किन्तु वह त्र्यक्षरा त्रिष्टुप् माध्यन्दिन के भार को न सम्भाल सकी, तो गायत्री ने कहा कि इस सवन में मेरा भाग निकालो तो मैं आपकी सहायता करूँ। त्रिष्टुप् ने कहा - एवमस्तु। अब गायत्री के ८ और त्रिष्टुप् के ३ अक्षर मिल कर ११ अक्षर हुवे। तब यह ११ अक्षरों का त्रिष्टुप् छन्द कहलाया। इसी से देवों ने माध्यन्दिन सवन पूरा किया। तदनन्तर सायं सवन के लिये जगती छन्द आगे आया। लेकिन एकाक्षरा जगती उसे न सम्भाल सकी, तो गायत्री ने कहा कि इस सवन में मेरा भाग निकालो तो मैं आपकी मदद करूँ। जगती ने कहा एवमस्तु। तब गायत्री के ११ और जगती का एक अक्षर मिलकर १२ अक्षरों का जगती छन्द कहलाया। इस से सायं सवन पूर्ण हुवा।

इस आख्यान के द्वारा छन्द विज्ञान प्रकट किया गया है। इसके अनुसार :-

१. सभी छन्द समान सामर्थ्य के नहीं होते।

२. एक छन्द दूसरे छन्द में परिवर्तित हो जाता है।

३. किसी अवरोधक से कुछ छन्द शक्तिहीन भी हो जाते हैं।

४. छन्दों की गतियों में भेद होता है।

५. दो छन्द मिलकर तीसरे नये छन्द को जन्म देते हैं।

इनके उदाहरण हमें लोक व्यवहार में देखने को मिलते हैं जैसे :- (१) इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं। इन सातों में लाल रंग की तरंग सदा सर्वदा बाहर की ओर ही होती है। क्योंकि लाल रंग की तरंग दैर्ध्य बड़ी होती है। (२) आकाश में बिजली चमकती है और बादल गरजते हैं। बिजली की चमक हमारी आँखों तक पहले पहुँचती है और गर्जना की आवाज बाद में सुनाई पड़ती है। क्योंकि प्रकाश की तरंग, ध्वनितरंग, से अधिक तीव्रगामी होती है। (३) अपने दूरभाष पर हम अमेरिका आदि दूर देशस्थ मित्रों से वार्तालाप करते हैं। हजारों मील की यात्रा करके ध्वनि तरंग क्षणों में कैसे पहुँच जाती है?ध्वनितरंग विद्युततरंग में बदलती है। पुनः विद्युततरंग ध्वनितरंग के रूप में बदल कर सुनाई देती है।

छन्द शब्द के विभिन्न अर्थः- १. गोस्थान (सूर्य) २. सूर्य रश्मि ३. सप्तधाम (सप्त छन्द अग्नि के धाम हैं) ४. छन्द अग्नि का प्रिय तनू है ५. वेद ६. छन्द शास्त्र ७. गायत्री आदि छन्द ८. संहिता ९. इच्छा १०. स्वच्छन्द = अनियंत्रित आचार

यज्ञ के तीनों सवनों में गायत्री छन्द का मुख्य भाग होने से उस छन्द का जीवन के लिए विशेष महत्व है। गायत्री छन्द के इस महत्व को दर्शाने के लिए छन्द शास्त्र में गायत्री के ३४ प्रभेद दर्शाये हैं। इतने भेद अन्य किसी भी छन्द के नहीं हैं।

ये गायत्री आदि छन्द क्या हैं? इसका उत्तर हमें ऐतरेय ब्राह्मण देता है :-

प्रजापतेर्वा एतान्यङ्गानि यच्छन्दांसि।

अर्थात्- ये छन्द (प्रजापति) सूर्य के ही अङ्गभूत हैं।

यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा का ही खेल है। ऊर्जा द्रव्य के रूप में तथा द्रव्य ऊर्जा के रूप में बदलते रहते हैं। ऊर्जा तरंग के रूप में गति करती है। ये तरंग ही वैदिक भाषा में छन्द कहलाते हैं। आङ्गल भाषा में इन्हें rays कहा जाता है। छन्दों के अनेकानेक भेद हैं। सात मुख्य छन्दों को सूर्य के घोड़े कहा जाता है-

हयाश्च सप्त छन्दांसि तेषां नामानि मे श्रृणु। गायत्री च बृहत्युष्णिग्जगती त्रिष्टुबेव च।

अनुष्टुप् पंक्तिरित्युक्ताश्छन्दांसि हरयोरवेः। (विष्णुपुराण दि. ७/८)

अर्थात् - ये गायत्री, बृहती, उष्णिक् आदि छन्द सूर्य के घोड़ों के समान हैं। जहाँ ये किरणें पहुँचती हैं वहीं सूर्य के दर्शन होते हैं। जहाँ प्रकाश नहीं पहुँचेगा वहाँ सूर्य के दर्शन नहीं हो सकते। इसलिये रश्मियों को घोड़ों की उपमा दी है। इन्हीं सात छन्दों का यजु.(१७/७६)में अग्नि की सात जिह्व के रूप में वर्णन किया है।

(यजु. १४/१६) में पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्यौ आदि को छन्द के रूप में ही बतलाया है। क्योंकि छन्द ही घनीभूत होकर द्रव्य का रूप ले लेते हैं। मन्त्र में देखें-

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो।

वाक् छन्दोमनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गोश्छन्दोऽजाच्छन्दोऽश्वश्छन्दः।।

विज्ञान के छात्रों को ध्वनितरंग, प्रकाशतरंग, विद्युत्तरंग, चुम्बकीय तरंग, आदि -आदि अनेक तरंगों का ज्ञान कराया जाता है। इन छन्दों की भिन्न-भिन्न गतियाँ और भिन्न रंग होते हैं तथा उनके अपने-अपने देवता भी होते हैं। छन्दों के यदि अपने रंग न होते तो इन्द्र धनुष में सात रंग कदापि देखने में न आते। छन्दों के समुदाय को प्रगाथ कहते हैं।

ध्वनि तरंग के विषय में ऋ.(१।१६४।२४) कहता है-

अक्षरेण मिमते सप्तवाणीः।

अर्थात्-वाणी द्वारा उच्चारित अक्षर से ही छन्दों का माप किया जाता है।

आचार्य दुर्ग लिखते हैं -नाच्छन्दसि वागुच्चरति। अर्थात्-बिना छन्द के कोई शब्द ही नहीं होता। दूरभाष में ये छन्द ही काम करते हैं। इसी बात को भरतमुनि दोहराते हैं :- छन्दोहीनो न शब्दोऽस्ति, न छन्दः शब्द वर्जितम्।

अर्थात्- एक भी वर्ण बिना छन्द के नहीं होता। अथवा यूँ कहें कि छन्द ध्वनियुक्त ही होता है। यहाँ यह अन्वेषटव्य है कि क्या प्रकाशतरंग, विद्युत्तरंग, चुम्बकीय तरंग आदि में भी कुछ ध्वनि होती है?

जो छन्द सर्जन में सहायक होते हैं, उन्हें- दैवी छन्द कहते हैं। जो ध्वंसात्मक होते हैं, उन्हें आसुरी छन्द कहते हैं। वेद में सूर्य को सहस्रांशु कहा गया है। उसका अर्थ है कि सूर्य से हजारों किस्म की रश्मियाँ निकलती हैं। हम अपनी आँखों से सूर्य की केवल सात तरंगों को ही देख सकते हैं। शेष तरंगें हमारी आँखों की ग्रहण क्षमता के क्षेत्र में नहीं आतीं। सूक्ष्म तरंग दैर्ध्य की रश्मियों को अल्ट्रावोयलेट रेज तथा विस्तीर्ण तरंग दैर्ध्य की तरंगों को इन्फ्रारैड रश्मियाँ कहते हैं। सूर्य की इन रश्मियों के कारण ही विभिन्न् ऋतुवें उत्पन्न होती हैं। गायत्री छन्द से वसन्त, त्रिष्टुप् से ग्रीष्म, जगती से वर्षा, अनुष्टुप् से शरद्, पंक्ति से हेमन्त और अति छन्दों से शिशिर ऋतु होती है।

रहस्य की बात यह है कि छन्द में जितने कम अक्षर होते हैं उतना ही वह तीव्र गति वाला होता है। एकाक्षर छन्द का उदाहरण ओम् है। इसे शास्त्रीय भाषा में कृति या मा कहते हैं। यह दैवी छन्दों का भेद है। यह सब से तीव्रतम गति का छन्द है। अक्षरों का छन्द की गति पर प्रभाव पड़ता है। ऋषि लोग इस विज्ञान को जानते थे इसीलिये वे अपने प्रतिपाद्य विषयों में सूत्रात्मक शैली का प्रयोग करते थे। मितभाषी व्यक्ति की वाणी अधिक प्रभावभाली होती है। इस कारण बुद्धिमान व्यक्ति कभी बहुभाषी नहीं होता। थोड़े शब्दों में ही वह अपने भाव कह देता है। छन्दों के रंगों के कारण हमारे भाव, विचार, मन, वाणी, भाषा, शरीर के अंग प्रत्यंग, नस-नाडियाँ, अणु-परमाणु, यह पूरा शरीर, हमारे कर्म, यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, उसका एक-एक पदार्थ चित्रित है। प्रत्येक अणु-परमाणु के रंग-रंग में भेद है तो वह छन्द भेद के कारण है। एक 'ओम्' छन्द श्वेत है शेष सभी छन्द किसी न किसी रंग से रंजित हैं। ओम् के उपासक के शेष सब रंग धुल जाते हैं। सूर्य से ही दैवी छन्द भी उत्पन्न होते हैं और सूर्य से ही आसुरी छन्द भी उत्पन्न होते हैं। इसलिए आलंकारिक भाषा में कहा जाता है कि देव और असुर प्रजापति की सन्तान हैं। असुर ज्येष्ठ हैं और देव कनिष्ठ हैं। जगत् उत्पत्ति के समय असुर छन्द सक्रिय होते हैं। धीरे-धीरे उनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है, तब दैवी छन्द क्रिया रूप में परिणत होते हैं।

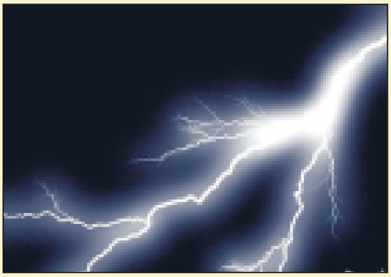

दैवी छन्द निर्माण करते हैं और आसुरी छन्द ध्वंस करते हैं। इसी को देवासुर संग्राम कहा जाता है। दर्जी किसी कपड़े को पहनने योग्य बनाता है तो पहले कैंची का प्रयोग करता है, फिर सूईधागे का। कैंची आसुरी छन्द का काम करती है और सूई-धागा दैवी छन्द का।

सूर्य की जो अल्ट्रावोयलेट रेज होती है, उनमें एक्स-रेज, गामारेज, कोस्मिकरेज, सुपर कोस्मिकरेज, मेगा कोस्मिकरेज एवं उनसे भी सूक्ष्म तरंगों के भेद हैं। ये इतनी शक्तिशाली और तीव्रगामी होती हैं कि लोहे की मोटी-२ दीवारों को भी बिना रुकावट के पार कर जाती हैं। आसमान से यदि सीधी कोस्मिक रश्मियाँ मानव के शरीर पर पड़ जायें तो मानव का शरीर जल कर भस्म हो जावे। कुछ एक्स-रेज आदि का उपयोग डाक्टर लोग चिकित्सालयों में करते हैं। इन्फ्रारैड रश्मियों में माइक्रो वेव्ज तथा रेडियो वेव्ज को कम्प्यूटर तथा टेलिविजन में प्रयोग किया जाता है। रश्मियों के इस विज्ञान से हमारे ऋषि लोग परिचित थे। वे इनका आत्म कल्याण हेतु ही प्रयोग करते थे। आजकल जैसे विध्वंसात्मक कृत्यों में उनका प्रयोग वे पाप मानते थे।

छन्दसां देवता स्वर वर्ण ऋषि

छन्दः	गायत्री पृथिवीलोक	त्रिष्टुप् अन्तरिक्षलोक	जगती द्यौलोक	बृहती	पंक्ति	अनुष्टुप्	उष्णिक्
देवताः	अग्निः (प्रातः सवन)	इन्द्रः (माध्यन्दिन सवन)	विश्वेदेवाः (सूर्यरश्मियाँ) (सायं सवन)	बृहस्पतिः	वरुणः	सोमः	सविता
स्वरः	षड्जः	धैवत	निषादः	मध्यमः	पञ्चमः	गान्धारः	ऋषभः
वर्णः	शुक्लः	रक्तः	गौरः	कृष्णः	नीलः	पीतः	कपिशः
ऋषिः	आग्निवेश्यः	कौशिकः	वासिष्ठः	आङ्गिरसः	भार्गवः	गौतमः	काश्यपः

वेदों और ब्राह्मणों का यह सूक्ष्म विज्ञान हमारे जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी है। हमने ऊपर बतलाया है कि जगती छन्द से वर्षा होती है। वर्षा से अन्न पैदा होते हैं।

ब्राह्मण का अद्भुत् जीवन चक्र देखिये :-

''अद्भिः अन्नं अन्नेन प्राणं प्राणेन अग्निः, अग्निना वायु, वायुना आदित्यः,
आदित्येन चन्द्रमा, चन्द्रमसा नक्षत्राणि, नक्षत्रै विद्युत् विद्युतात् वृष्टिः'' (शत.१०.५.२.११)

यज्ञों में जगती छन्द के सस्वर पाठ से आदित्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रों में प्रतिक्रिया के फलस्वरूप विद्युत् उत्पन्न होकर वृष्टि का कारण बनती है। इस विज्ञान से सुपरिचित ऋषि लोग वर्षेष्टि याग करके वर्षा कर लेते थे।

ऐतरेय ब्राह्मण कहता है-विद्युत् हीदं वृष्टिमन्नाद्यं संप्रयच्छति ।(२।४१)

अर्थात्- विद्युत से ही वृष्टि और अन्नादि पैदा होते हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण की प्राचीनता :-श्री गुरुवर्य पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक लिखते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय ब्राह्मण सबसे अधिक प्राचीन है। उसका प्रवचन आज से लगभग ६६०० वर्ष पूर्व का है। इसमें ३६ अध्याय हैं। उसके प्रथम २६ अध्याय ऐतरेय महिदास प्रोक्त हैं। अन्तिम १० अध्याय शौनक प्रोक्त हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के काल विषय में हमारा विचार भिन्न है।

यास्क लिखता है-

साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत्धर्मस्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुः
उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेम ग्रन्थं समाम्नात्तिषु वेदं च वेदांगानि च'

यह काल त्रेतायुग का है। जब ब्राह्मणों का प्रवचन हुवा।

मन्त्रान् = ब्राह्मण (निरुक्तलोचन) निरुक्त के आधार भी ब्राह्मण ग्रन्थ थे।

ऐतरेय ब्राह्मण के शुनः शेप आख्यान में त्रिकालातीत सत्य की शिक्षा :-

इन्द्र रोहित से कहता है :-

नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुमः। पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा, चरैवेति।।१।।
पुष्पिण्यौ चरतो जङ्घे भूष्णुरात्मा फलग्रहिः। शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हतश्चरैवेति।।२।।
आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वास्तिष्ठति तिष्ठतः। शेते निपद्यमानस्य चराति चरतो भगश्चरैवेति ।।३।।
कलि शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापर । उत्तिष्ठन् त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरंश्चरैवेति ।।४।।
चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम् । सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति ।।५।।

अर्थात्- बिना परिश्रम के किसी भी व्यक्ति को जीवन में कभी यशश्री नहीं मिलती। समाज का श्रेष्ठतम व्यक्ति भी श्रम के त्याग से पाप का भागी हो जाता है।।१।।

परिश्रमी व्यक्ति अपने परिश्रम से सुन्दर सुडौल शरीर का निर्माण कर लेता है। सच्चे स्वास्थ्य का आनन्द परिश्रमी ही प्राप्त करते हैं। परिश्रमी व्यक्ति के पाप भी दूर भाग जाते हैं। वे थक कर सो जाते हैं।।२।।

बैठे रहने वाले व्यक्ति का भाग्य भी बैठ जाता है। खड़े होने वाले व्यक्ति का भाग्य भी खड़ा हो जाता है। सोने वाले का भाग्य पड़ कर सो जाता हैं। चलने वाले व्यक्ति का भाग्य भी चलने लगता है। अर्थात्- व्यक्ति स्वयं ही अपने भाग्य का विधाता है। वह जैसा चाहे वैसा ही उसका निर्माण कर सकता है ।।३।।

सोता हुवा व्यक्ति कलिकाल के समान है। चारपायी छोड़ कर उठ खड़ा होने वाला द्वापर है। उठकर चलता हुवा त्रेता है। उद्यम करने वाला सतयुग है ।।४।।

उद्यमी व्यक्ति का जीवन माधुर्य से भर जाता है। वह जीवन के उत्तमोत्तम फलों को प्राप्त कर लेता है। चलते हुवे सूर्य को देखो वह क्षणभर का भी प्रमाद नहीं करता। इसलिये सफलता के अभिलाषी व्यक्ति को कभी भी श्रम का त्याग नहीं करना चाहिये। सदा चलते रहो, आगे ही आगे बढ़ते रहो। वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो। रुको नहीं बढ़े चलो, थको नहीं बढ़े चलो। अटको नहीं बढ़े चलो, भटको नहीं बढ़े चलो। यही त्रिकालातीत शिक्षा है।।५।।

इस महान् ग्रन्थ पर अनुसंधान करने वाले श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक हमारे श्रद्धा और सम्मान के पात्र हैं। इस पवित्र यज्ञ में उनका जीवन समर्पित है। हम सब को दिल खोलकर तन, मन, धन, से उन की इस कार्य में हर सम्भव सहायता करनी चाहिये। यह महान् पुण्य का कार्य है।

□□□

समस्त ऋषि भक्त आर्यों के नाम विनम्र निवेदन

सत्यार्थ सौरभ २०१३ व कुछ अन्य पत्रिकाओं में ऋ. १०/८६/१६-१७ दो मन्त्रों का आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक भाष्य मेरे द्वारा अपनी विशेष शैली से किया था, प्रकाशित हुआ। इन दोनों मन्त्रों का आचार्य सायण द्वारा किया भाष्य मेरी दृष्टि में अश्लील, अनावश्यक एवं असभ्यता पूर्ण है। दुर्भाग्य से दो आर्य विद्वानों ने इनका भाष्य करने में महर्षि दयानन्द जी की यौगिक शैली की उपेक्षा कर आचार्य सायण की नकल करके रूढ़ अर्थ कर दिया था। मेरे विचार में इन मंत्रों के भाष्य सही नहीं किए गए। अतएव मैंने इन मंत्रों का त्रिविध भाष्य किया। परोपकारी मार्च प्रथम एवं द्वितीय २०१३ में मेरे भाष्य की आलोचना प्रकाशित हुई जिसमें पूर्व विद्वानों के अश्लील भाष्य का समर्थन करते हुए मेरे वेदभाष्य पर अनेक प्रश्न उठाते हुए इसे ऋषि शैली के प्रतिकूल बताया गया। जिसका सम्पूर्ण समाधान मैंने ई-मेल द्वारा परोपकारी को प्रेषित कर दिया था। पर उस पत्र में इसे छापा नहीं गया। मैं अपने ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य की भूमिका लिखने में व्यस्त हूँ, फिर व्याख्यान लेखन प्रारम्भ होगा। मेरा उत्तर **"वेदविज्ञानभाष्यमण्डनम्- आर्यसत्यजिद्भ्रमभंजनम्"** नामक पुस्तक के रूप में भी स्वाध्यायशील आर्य पुरुषों के लिये प्रकाशित किया गया है, जो सज्जन इस पुस्तक को प्राप्त करना चाहें, वे दूरभाष से सम्पर्क कर पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं। आगे भी यदि मेरी वेद विज्ञान अनुसंधान शैली के विषय में किसी भी पत्रिका में कोई प्रश्न उठाये जायेंगे तो उनमें से यदि कोई प्रश्न गम्भीर हुआ तो उसका उत्तर मैं किसी पत्रिका में अथवा व्यक्तिगत न देकर अपनी भूमिका में समाविष्ट करने का प्रयास करूँगा। आर्यजनों से निवेदन है कि वेद विज्ञान सम्बन्धी विभिन्न महत्वपूर्ण प्रश्नों के समाधान के लिए किसी भ्रम में न पड़कर मेरे ऐतरेय ब्राह्मण वैज्ञानिक व्याख्यान के पूर्ण होने की कुछ वर्ष तक प्रतीक्षा करें।

आपका
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
मोबाइल-०९४१४१८२१७३

सत्यार्थ-पीयूष

शिक्षा की आवश्यकता, महत्त्व व उद्देश्य-

स्वामी दयानन्द की दृष्टि में शिक्षा को मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता बतलाया गया है। {स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन}।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश सहित अपने समस्त ग्रन्थों एवं प्रवचनों में शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया है। उनका मत था कि व्यक्ति, समाज, राज्य और राष्ट्र की उन्नति और सुख समृद्धि तब तक सम्भव नहीं है जब तक राष्ट्र के सभी नर-नारी पूर्णतया सुशिक्षित न हो जाएँ। इसलिए सबको शिक्षित होकर धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का समुचित ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ताकि विद्या-ज्ञान-विज्ञान को सर्वहित में प्रयुक्त किया जा सके। यही कारण है कि महर्षि ने सबसे बड़ा आभूषण चाँदी, सोना, हीरे, जवाहरात आदि को न मानकर शिक्षा को ही सर्वश्रेष्ठ आभूषण माना है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के प्रारम्भ में सबसे पहले और एक प्रकार से अपनी नीति की प्रस्तावना में वे शिक्षा की आवश्यकता और महत्त्व अर्थात् मानव मात्र की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति को उजागर करते हुए लिखते हैं-

"सोना, चाँदी, माणिक, मोती, मूँगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण कराने में केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषणों के योग से बालिकादिकों की मृत्यु दुष्टों के हाथ से होती है अतः सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता-पिता-आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है"{स.प्र. पृ. ३७}

विद्या विलास मनसो धृतशीलशिक्षाः, सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः। संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये, धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः।।

उपरोक्त श्लोक के अर्थ में उन नर-नारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए महर्षि जी लिखते हैं- जो वास्तविक में विद्या विलासी हैं, जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, वेद विहित कर्मों से पराये उपकार करने में लगे रहते हैं, वे नर नारी धन्य हैं।

वे अपने यजुर्वेद भाष्य में शिक्षा का महत्त्व निम्न प्रकार प्रकट करते हैं-

१) पशु भी सुशिक्षा पाये, उत्तम कार्य सिद्ध करते हैं। क्या फिर विद्या की शिक्षा से युक्त मनुष्य लोग सब उत्तम कार्य सिद्ध नहीं कर सकते? (यजु.दयानन्द भाष्य २०/७८)

२) माता, पिता और आचार्य का यही परमधर्म है कि सन्तानों के लिए ब्रह्मचर्य से अच्छी शिक्षा की प्राप्ति कराना।

(यजु.दयानन्द भाष्य १२/४५)

३) यही एक अक्षय कोश है। इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाता है और अन्य सब कोष व्यय करने से घट जाते हैं और दायभागी भी निज भाग ले लेते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

४) सर्वदा सन्तानों की शिक्षा में धन व्यय करे किन्तु विवाह तथा मृत्यु आदि में न करे।

उपर्युक्त उद्धरणों से यह भली भाँति विदित हो रहा है कि मानव जीवन में शिक्षा की कितनी आवश्यकता और कितना महत्त्व है। बिना शिक्षा के व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास नहीं हो सकता और जिस सामाजिक परिवेश में हम रहते हैं उससे ठीक ठीक प्रकार से सामञ्जस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का यह धर्म है कि पुत्र-पुत्रियों को शिक्षित अवश्य करें-करावें।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि महर्षि जी शिक्षा को मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का साधन मानते हैं। इसी कारण यह एक सतत् प्रक्रिया है। खेद है कि आज शिक्षा को मात्र नौकरी या जीविकोपार्जन के लिए ही आवश्यक माना जाता है। आज शिक्षा का उद्देश्य अत्यन्त संकीर्ण, येन-केन प्रकारेण डिग्री प्राप्त कर, नौकरी प्राप्त कर लेना मात्र हो गया है। जबकि महर्षि जी की दृष्टि में शिक्षा जीविकोपार्जन हेतु योग्यता

अर्जित कर लेने के साथ-साथ मानव जीवन के निर्माण एवं उसकी आत्मिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का भी साधन है।

महर्षि जी के इस विचार का समर्थन हमें योगी अरविन्द तथा एडीसन के निम्न कथनों में मिलता है।

''ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म आर्ष शिक्षा के मूल तत्त्व हैं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए ऐसी उपयुक्त शिक्षा देना जिससे भावी सन्तान ज्ञानी, सत्यनिष्ठ और विनीत हो।''– योगी अरविन्द

''संगमरमर के लिए जो उपयोगिता शिल्प की है, मानव आत्मा के लिए वही उपयोग शिक्षा का है। बहुधा, अनेक दार्शनिक, सन्त, योद्धा, मनीषी, सज्जन और महापुरुष सामान्य मनुष्यों में ही ढके, मुँदे और छिपे रहते हैं। यदि उन्हें समुचित शिक्षा का अवसर मिले तो वे भी अपना आवरण हटा कर प्रकाश में आ सकते है। – एडीसन

संपादक- अशोक आर्य

□□□

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

•आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

निवेदक

भवानीदास आर्य – मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग – कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया – उपमंत्री-न्यास

दयानन्द सूक्ति - संग्रह

बाल-शिक्षा

आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान,विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषणों के योग से बालकादिकों की मृत्यु दुष्टों के हाथ में होती है। स.प्र.समु. ३, पृ.३६

द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवित और कन्याओं का यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें। विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के लड़कियों की पाठशाला दो कोश एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहाँ अध्यापक पुरुष व नौकर-चाकर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। स.प्र.समु. ३, पृ.३६

पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर गाँव व नगर रहें। सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान,आसन दिए जायें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सब को तपस्वी होना चाहिए। स.प्र.समु. ३, पृ.३७

वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से इन्सानों को उपकार पहुँचता है, उतना किसी को नहीं। इसीलिए मातृमान् अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान'। धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे। स.प्र.समु. ३, पृ.२८

चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की सन्तानों को शिक्षा करें। स.प्र.समु. ३, पृ.३३

मिथ्या बातों (से बचने) का उपदेश बाल्यावस्था ही में सन्तानों के हृदय में डाल दें कि जिससे स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल में पड़के दुःख न पावे। स.प्र.समु. २, पृ.३१

संकलनकर्ता – वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

गतांक से आगे......

मधुमेह (डायबिटीज) - कारण व उपचार

विमल वधावन 'योगाचार्य '

उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता। जिस मुल्क की सरहद पे निगहबान हैं आँखें।।

दुश्मन देशों की फौजें किसी देश की सरहद पर हमला करने के लिए सदैव तैयार रहती हैं परन्तु देश भक्त वीर जवानों की तपस्या भी सदैव उग्रवादी फौजों को आगे बढ़ने से रोकने में सफल रहती है। साथ ही यह भी निश्चित है कि नजर हटी दुर्घटना घटी।

बस डायबिटीज का उपचार भी इसी छोटे से सिद्धान्त में छिपा है। जिस क्रम में आपने डायबिटीज के कारणों को पढ़कर समझा है, उसी क्रम में अब उपचार को समझना कठिन नहीं होगा। बस उन कारणों की पुनरावृत्ति जीवन में नहीं होनी चाहिए। यदि आप ऐसी तपस्या कर सकते हैं तो डायबिटीज का उपचार सरल हो सकता है।

१.आनुवांशिक कारणों को कोई दूर नहीं कर सकता परन्तु अपने संकल्प और घोर तपस्या के साथ ईश्वर के आशीर्वाद को प्राप्त करके आप इस रोग को नियन्त्रण में अवश्य रख सकते हैं। आनुवांशिक कारण अर्थात् जिसके माता या पिता को डायबिटीज का रोग रहा है, उन लोगों को तो अपने जीवन के प्रारम्भ से विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है अन्यथा उनके शरीर में तो इस रोग के प्रभाव तीव्र गति से बढ़ सकते है।

२.आहार शुद्धिः- आपको सर्व प्रथम आहार से जुड़े वैज्ञानिक पक्ष को समझ लेना चाहिए।

भोजन के प्रभाव दो प्रकार के हो सकते हैं- क्षारीय (Alkaline) और अम्लीय (Acidic)। शरीर की पाचन क्रिया सुचारू रूप से चलाने के लिए हमें ८० प्रतिशत क्षारीय प्रभाव वाला भोजन करना चाहिए। केवल २० प्रतिशत भोजन अम्ल पैदा करने वाला हो।

क्षारीय भोजनः- ताजे फल, पक्के और खट्टे फल, बिना उबला दूध, छाछ (लस्सी), हरे पत्तों वाली सब्जियाँ, मटर, आलू छिलके सहित, मूली पत्तों सहित, शहद, नारियल, किशमिश, दही, गन्ने का रस, गाजर, सलाद, अंकुरित दालें आदि।

अम्लीय भोजनः- माँस, मछली, अण्डे, ब्रेड, दालें, सूखे फल, मिठाइयाँ, चाय, कॉफी, गेंहूँ, चावल, मक्का, टमाटर की चटनी, अचार, बासी भोजन, मिर्च-मसाले, तेल से बना भोजन, डिबाबन्द चीजें।

इसलिए अपने भोजन में केवल २० प्रतिशत अम्लीय भोजन शामिल करने के लिए भी इस सूची में से ऐसी अच्छी-अच्छी वस्तुएँ चुनें जिनका और कोई दुष्प्रभाव न हो। हमेशा याद रखें कि माँस इत्यादि या चाय कॉफी आदि तो बहुत बुरा प्रभाव शरीर पर डालती हैं।

इसके अतिरिक्त आहार दोष में बताए गए कारणों को जीवन से दूर रखने का प्रयास करें। निम्न विशेष उपायों को जीवन में उतारने का प्रयास करते रहें।

क्या खाएँ, कैसे खाएँ?

❖ सिर्फ भूख लगने पर ही खाना खायें। केवल इतना खायें जिससे भूख शान्त हो जाये। अगर आप ४० वर्ष से अधिक हैं तो चपाती जैसा ठोस खाना कम लें।

❖ खाना खाते समय चबाने पर ध्यान रखें, जब तक पहला ग्रास न चबा लिया जाये (कम से कम ३२ बार) दूसरा ग्रास न लें।

❖ खाते समय न टी.वी. देखना है न मन में कोई चिन्ता रखनी है और न ही कोई बात करनी है।

❖ शान्ति से बैठें परमात्मा और प्रकृति को धन्यवाद दें कि उन्होंने हमें इतना अच्छा भोजन दिया है।

❖ खाना खाने के तुरन्त बाद काम में न लगें बल्कि १० मिनट वज्रासन में बैठें।

❖ मिर्च, मसालेदार, तला हुआ, भारी व बासा भोजन न करें। विवाह के अवसर पर दावतों में न खायें अथवा कम खाएँ।

❖ कच्चा भोजन ज्यादा से ज्यादा खाने का प्रयास करें, जैसे-फल, सब्जी और अंकुरित दालें।

❖ सारे दिन उपयुक्त मात्रा में पानी पियें लेकिन एक घण्टा भोजन से पहले, भोजन के बाद और भोजन के मध्य में पानी न लें और यदि भोजन के दौरान बहुत इच्छा करे तो केवल १ या २ घूँट ले लें।

❖ तीन प्रकार के जहर न खायें। मैदा, नमक (परिष्कृत और आयेडाइज्ड) और दानेदार चीनी। आयोडीन बेशक एक महत्त्वपूर्ण धातु है परन्तु नष्ट कर दी जाती है। अतः सैंधा या काला नमक ही प्रयोग करना चाहिए। आयोडीन की पूर्ति तो हरे

पत्ते वाली सब्जियों तथा दूध से भी की जा सकती है। मैदा पाचन क्रिया पर पूरा बोझ है। अतः समोसे, कचौड़ी, मठरी, चाऊमिन, ब्रेड, कुल्चे, भटूरे, बिस्कुट आदि के सेवन को वर्जित ही कर देना चाहिए।

❖ सप्ताह में एक बार उपवास रखें और केवल फलाहार लें।

❖ चोकर वाले आटे का प्रयोग करें।

❖ फल व सब्जियों को खाने से पहले अच्छी तरह से धो लें।

❖ खाना खाने से पहले हाथ-पॉव धोएँ और खाना खाने के बाद मुँह और दांत साफ कर लें।

❖ ज्यादा गर्म या ज्यादा ठंडा भोजन न लें।

❖ अगर खाना खाने के बाद बेचैनी हो तो अगला भोजन न लें।

❖ दही केवल दिन में ही लेना चाहिए।

❖ दालें व चावल अच्छी तरह से धोकर और कुछ देर भिगोकर पकाएँ। इनको इतने पानी में पकाएँ कि चावल बनने के बाद पानी न रहें जिससे विटामिन और खनिज पदार्थ चावलों में ही रहें और फालतू पानी को फेंकना न पड़े।

❖ दोपहर १२ बजे तक शरीर में सफाई का कार्य चलता है। इस समय ज्यादा नहीं खाना चाहिए। तरल पदार्थ या अंकुरित दालें या अन्न और दूध व जूस पीना चाहिए।

❖ दोपहर १२ बजे से सायं ७ बजे तक दो बार भोजन करना चाहिए। रात्रि भोजन हल्का होना चाहिए।

❖ मल्टीग्रेन (Multigrain)आटा तैयार करने के लिए स्वयं बाजार से १. काले चने २. सोयाबीन ३. जौ ४. जेई ५. रागी ६. अलसी बराबर मात्रा में खरीद कर चक्की से पिसवा लें। अब इस मल्टीग्रेन आटे से यदि एक कटोरी आटा लें तो गेहूँ का भी एक कटोरी आटा मिलाकर उसमें घिया, उबले आलू या पनीर आदि को मिक्स करके मिस्सी चपातियाँ तैयार करें, इस आटे से बनी चपातियाँ पाचन तन्त्र के लिए सुगम होती हैं तथा मधुमेह का स्तर कम करने में भी सहायक होती हैं। सर्दियों के मौसम में उपरोक्त के अतिरिक्त तीन अन्य अनाज :-

१. ज्वार, २. बाजरा और ३. मक्का भी मिलाए जा सकते हैं।

❖ रात को सोने से पहले शवासन में लेटें और सारे दिन में किये गये कार्यों पर विचार करें। अच्छे कार्यों के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें और गलती के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें। स्वयं को इन शब्दों से प्रार्थना करने के लिए अवश्य तैयार करें- "जो भी व्यवहार में संसार के प्रति करता हूँ वैसा ही पाने के लिए तैयार रहूँ।"

❖ यह शब्द आपके दृष्टिकोण को बदलेंगे और अच्छी आत्मा के रूप में आपका सुधार होगा, जिससे कि आप संसार की परेशानियों और उग्रताओं से व्यथित न होंगे। सदैव पाचन तन्त्र विषय के अन्तर्गत दी गई जानकारी का स्मरण अवश्य रखें जो हमारे भोजन और उसकी पाचन क्रिया के बारे में दी गई हैं।

३. आचरण सुधारः- इस उपचार में भी सदा आचरण दोषों पर चिन्तन पूर्वक उन्हें जीवन से दूर रखने का प्रयास करें।

❖ प्रतिदिन ध्यान, योग, निद्रा आदि के लिए न्यूनतम १०-१५ मिनिट प्रातः और सायं दोनों समय निकालें। अपने शरीर के अंगो से लेकर अपने आत्मा के उत्थान के लिए सदैव चिन्तन करते रहें। अपने आत्मा को परमात्मा के साथ मिलाकर एक अच्छे पिता-पुत्र या सखा की तरह समझने का प्रयास करें। परमात्मा से मित्रता का सबसे सीधा उपाय है कि अन्य सभी प्राणियों को अपनी तरह एक आत्मा ही समझें।

❖ गुस्सा, तनाव आदि को सदा नियन्त्रण में रखने का प्रयास करें। हर वक्त ये पंक्तियाँ अपने मन में गाते रहें:-

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा,
तेरा तुझ को सौंप के, क्या लागे है मेरा।।

❖ अधिक से अधिक परोपकारी कार्यों में केवल अपना धन ही नहीं अपितु धन के साथ-साथ समय निकाल कर अपनी मेहनत भी लगाएँ। आपके पास इस पुस्तिका का पहुँचना और डायबिटीज की आयुर्वेदिक औषधि का रोगियों में वितरण इसी प्रकार का कार्य है जिसमें हमारे साथ कई अन्य आत्माओं का धन और प्रयास लगे हैं। परोपकारी कार्यों में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने से व्यक्ति दैविक शक्तियों के साथ सम्बन्ध बनाने में सफल हो सकता है।

४. कार्यशैली सुधारः- कार्यशैली दोषों के अन्तर्गत बहुत सी बातें कही गई हैं। उन पर चिन्तन करें। और अपने जीवन में अधिकाधिक सुधार लाने का प्रयास करें।

❖ मेहनत से कभी जी न चुराएँ, पसीने से न घबराएँ।

❖ अपने कार्य को स्वयं करें ही अपितु अन्यों की सहायता के लिए भी सदा तैयार रहें।

❖ अधिकाधिक प्राकृतिक रूप से जीवन में जीने का प्रयास करें।

❖ योग आसनों और प्राणायाम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लें।

❖ डायबिटीज रोगों से लड़ने के लिए विशेष रूप से कुछ यौगिक उपाय जैसे- आसन, प्राणायाम, ध्यान, योग-निद्रा तथा शोधन क्रियाएँ तथा कुछ वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ भी अत्यन्त लाभकारी हैं।

५. यौगिक उपाय : शुगर का मूल कारण आधुनिक जीवन पद्धति और उसके परिणाम स्वरूप तनावयुक्त तथा प्रतियोगी जीवन की मानसिकता है। इस जीवन पद्धति में तनाव आदि के कारण पहले तंत्रिका तंत्र प्रभावित होता है। उससे पाचन क्रिया बाधित होती है। अन्ततः भोजन के चयापचय (Metabolism) की प्रक्रिया सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं हो पाती। इस कारण पौष्टिक भोजन भी शरीर को लाभ नहीं दे पाता। ऐसी परिस्थिति में उन शरीरों का तो कहना ही क्या जो दूषित और हानिकारक तत्त्वों से युक्त भोजन करते हैं। जैसे- अधिक मिर्च-मसाले, नमक, तेल, मैदा, चीनी, माँस तथा शराब, तम्बाकू और चाय जैसे नशीले पदार्थ। तनावयुक्त शरीरों में बिगड़े हुए तन्त्र तो ऐसे हानिकारक पदार्थों के सेवन से और अधिक दुष्प्रभाव उत्पन्न करते है।

समाप्त

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२९४-२४१७६९४, चलभाष ०९३१४५३५३७९

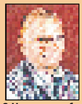
श्री भँवर लाल आर्य

श्रीमती ललिता मेहता

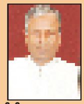
श्री पी. एन. जायसवाल

आर्य समाज, हिरणमगरी उदयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

सत्र २०१३-१४ के लिए आर्य समाज, हिरणमगरी उदयपुर के वार्षिक चुनाव श्री अशोक आर्य द्वारा दिनांक २१.४.१३ को सम्पन्न कराए गए। निर्वाचित सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

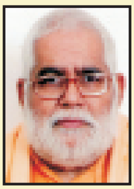
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

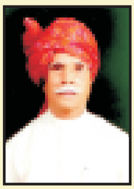
श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य
नागपुर

श्री लोकेश चन्द्र टाक
बैंगलोर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्रीमती गायत्री पंवार
जयपुर

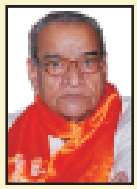
श्री प्रधान जी
मध्यभारतीय आ. प्र. सभा

श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव
कोटा

श्री भारतभूषण गुप्ता
नोएडा

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

डॉ. मोतीलाल शर्मा
जयपुर

डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता
कोटा

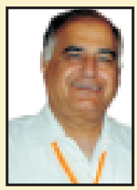
श्री वीरमुखी
लॉग्स आइलैण्ड, अमेरिका

श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक
बैंगलुरू

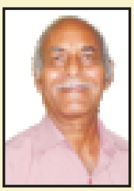
डॉ. अमृतलाल तापड़िया
उदयपुर

श्री विकास गुप्ता
नोएडा

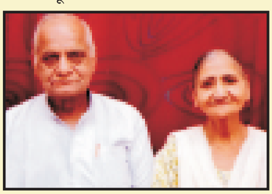
श्री रामप्रकाश छाबड़ा एवं श्रीमती कलावती छाबड़ा
दिल्ली

आर्य समाज हिरण मगरी
उदयपुर

डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

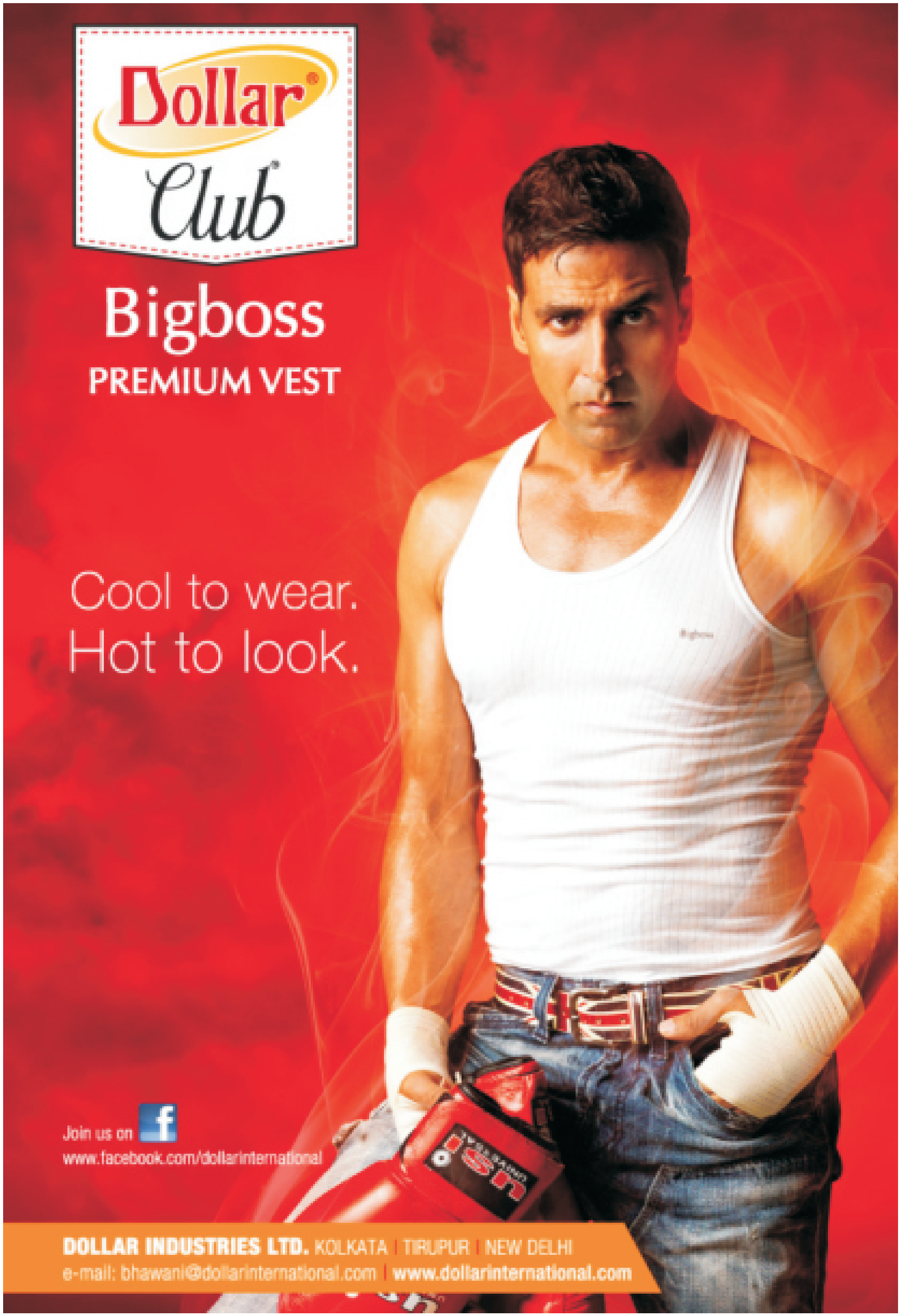
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Cool to wear.
Hot to look.
Join us on
www.facebook.com/dollarinternational
DOLLAR INDUSTRIES LTD. KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarinternational.com | www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 MAY -2013 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था, और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहाँ प्राप्त हुई और देख यह सेतु हमने बाँध कर लड़ाई में आके रावण को मार तुझको ले आये।

सत्यार्थ प्रकाश पृ.-३१६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य